15/-
जनवरी 2022
वर्षः 19 अंकः 2

श्री सुदर्शन संदेश

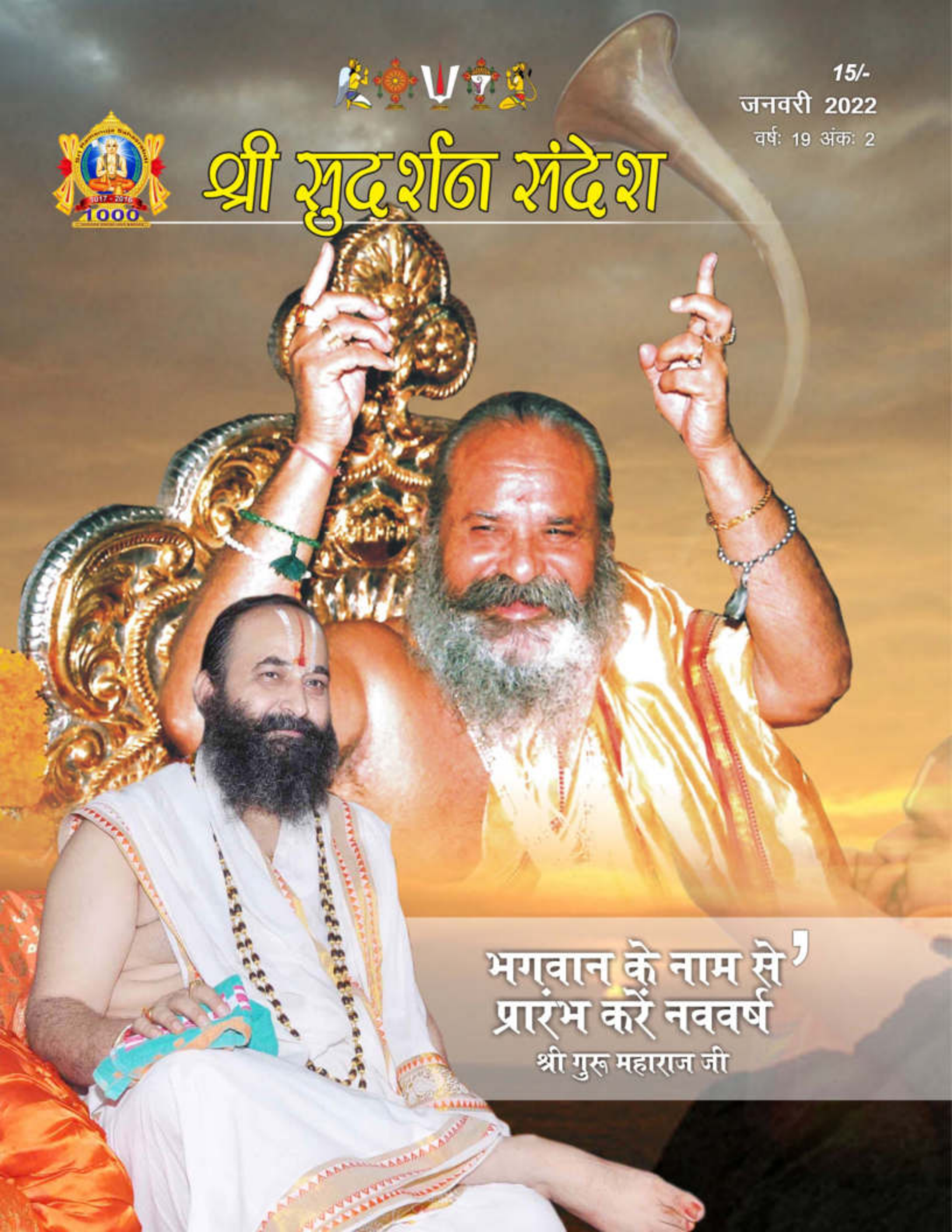

भगवान के नाम से' प्रारंभ करें नववर्ष

श्री गुरू महाराज जी

गीता जयंती पर श्री सिद्धदाता आश्रम

गीता जयंती के अवसर पर श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) में अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज ने स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय के छात्रों संग गीता के श्लोकों संग आश्रम की परिक्रमा की। 2–3 आश्रम की गीता थीम पर बनाई झांकी। 4– प्रशासन द्वारा आयोजित गीता जयंती महोत्सव में केंद्रीय मंत्री श्री कृष्णपाल गुर्जर जी, प्रदेश के मंत्री श्री मूलचंद शर्मा जी श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा आयोजित हवन में समिधा डालते हुए एवं 5–आश्रम की प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए। 6–महोत्सव में आश्रम को सम्मान 7–आश्रम की प्रदर्शनी।

श्री सुदर्शन संदेश

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित

शरीर और संसार के साथ अपना संबंध मानना ही वास्तव में समस्याओं को जन्म देता है। जगत की वस्तुओं के साथ संबंध बनाना ही दुखों का असली कारण है। वास्तव में हमें मानना होगा कि हम वस्तुओं के लिए नहीं जन्मे अपितु वस्तुएं जीवन यापन के लिए सहारा हैं। हमें तो परमात्मा की कृपा को पाने के लिए यह जन्म मिला है। जो क्षणभंगुर है। इसको वस्तुओं में नहीं बल्कि परमात्मा में रमाओ।

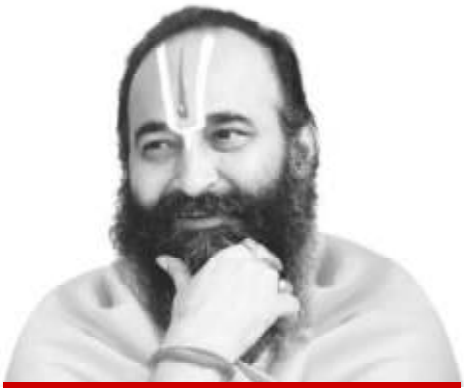

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज

अधिपति– श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम
श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

गुरू गोबिन्द दोउ खड़े काके लागूं पाय
बलिहारी गुरू आपने जिन गोबिन्द दिया मिलाय

वर्ष: 19, अंक: 2 हिन्दी मासिक

जनवरी 2022

संरक्षक :
अनन्त श्री विभूषित इन्द्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज

संपादक : शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'

सलाहकार: डी. सी. तँवर

प्रकाशक : जनहित मानव कल्याण केन्द्र

पत्राचार : श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम,
श्री सिद्धदाता आश्रम,
बडखल–सूरजकुण्ड मार्ग,
फरीदाबाद–121003 (हरियाणा)

दूरभाष : 9910907109

E-mail : shrisidhdataashram.org@gmail.com
website : www.shrisidhdataashram.org

वैधानिक : न्यायक्षेत्र दिल्ली ही होगा।

स्वत्वाधिकारी जनहित मानव कल्याण केन्द्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक प्रह्लाद शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794–95, गुरु रामदास नगर एक्सटेंशन, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092 से मुद्रित एवं ई–9, मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली–110091 से प्रकाशित।

संपादक : शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'
(9911161753)

कृपया श्री सुदर्शन संदेश में प्रकाशन के लिए अपनी शिकायतें, सुझाव, लेख, संस्मरण या अनुभव पत्राचार के पते यानि श्री सिद्धदाता आश्रम को भेजें। आप इन्हें आश्रम की ईमेल पर भी भेज सकते हैं।

अनुक्रमणिका

1. श्रीगुरूगीता : परमगुरू अपने शिष्य को अलौकिक प्रकाश प्रदान करते हैं *श्रद्धेय ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज* 5
2. संपादकीय : जीवन को गुलिस्तां बनाओ
शकुन रघुवंशी श्रीधर 06
3. जो करंसी सरकार ने बंद कर दी
श्री वैकुंठवासी गुरू महाराज जी ...8
4. गुरू की भी मानें
श्रद्धेय ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज 14
5. इसे कृपामय शरीर मानें
श्रद्धेय ज.गु.रा. स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज 17
6. पंचांग 24
7. प्यार करने वाला मूल्य नहीं चाहता*श्री वै. गुरू महाराज जी* ...32
8. *श्री सिद्धदाता आश्रम को जानें* 38
9. गुरू परम्परा का प्रभाव 39
10. *श्री रामानुज जन्म* 41

⏭ *श्री सिद्धदाता आश्रम के अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में भाष्यकार रामानुज का पूजन करते हुए।*

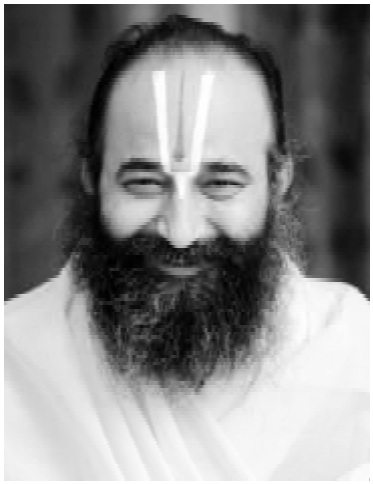

परमगुरू अपने शिष्य को अलौकिक प्रकाश प्रदान करते हैं

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज, पीठाधिपति–श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

यस्य दर्शनमात्रेण मनसः स्यात् प्रसन्नता। स्वयंभूयात् धृतिश्शान्तिः स भवेत् परमोगुरूः।।183।।
स्वशरीरं शवं पश्यन् तथा स्वास्थ्यानमद्वयम्। यः स्त्रीकनकमोहघ्नः स भवेत् परमो गुरूः।।184।।
मौनी वाग्मीति तत्त्वज्ञो द्विधाभूच्छृणु पार्वति। न कश्चिन्मौनिना लाभो लोकेऽस्मिन्भवति प्रिये।।185।।
वाग्मी तूत्कटसंसारसागरोत्तारणक्षमः। यतोऽसौ संशयच्छेत्ता शास्त्रयुक्तत्यनुभूतिभिः।।186।।

अर्थात् *परमगुरू के दर्शनमात्र से मन प्रसन्न होता है। अपने आप धैर्य और शान्ति आ जाती है। परमगुरू अपने शरीर को शव समझते हैं, आत्मा को अद्वय जानते हैं और कामिनी और कंचन के मोह के नाशकर्ता हैं। दो प्रकार के तत्तवज्ञ होते हैं, मौनी और वक्ता। इनमें से मौनी गुरू से जनता को कोई लाभ नहीं होता, परन्तु वक्ता गुरू दारूण संसार को पार कराने में समर्थ होते हैं। क्योंकि वह शास्त्रोक्त तर्क और अनुभूति से सभी संशयों को नष्ट करते हैं।*

व्याख्या : *परमगुरू के बारे में भगवान स्वयं बता रहे हैं कि वह ब्रह्म की शक्ति को प्राप्त कर चुके हैं। वह बता रहे हैं कि ऐसे परमगुरू के दर्शन वास्तव में ब्रह्म की कृपा प्रदान करने वाले ही हैं। ऐसे गुरू अपने आप में मगन रहते हैं और अपने शिष्यों के जीवन में अलौकिक प्रकाश प्रदान करते हैं। क्रमशः जारी*

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः, पूजामूलं गुरोः पदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।

जीवन को गुलिस्तां बनाओ

शकुन रघुवंशी श्रीधर

हमारे जीवन में सबसे अधिक समस्याएं हमारे आस पास रहने वाले लोगों द्वारा पैदा की जाती हैं।

न-न गलत मत समझना। ऐसा मैं नहीं कह रहा बल्कि अधिकांश लोगों से जब आप बात करेंगे तो करीब ऐसे ही जवाब उनसे आपको प्राप्त होंगे।

आप लोगों से बात करेंगे तो पाएंगे कि उनकी अधिकांश समस्याओं का कारण अन्य लोग होंगे। लेकिन आप जब थोड़ा भी ध्यान से देखेंगे पाएंगे कि हमारी समस्याओं के लिए कोई और नहीं बल्कि अधिकांश हम ही जिम्मेदार होते हैं, वह समस्याएं हमारे द्वारा ही स्वयं के लिए पोषित की जाती हैं और स्वयं के लिए पाली जाती हैं।

लेकिन जब वह समस्याएं हमें डसने लगती हैं तो हम लगते हैं उनके लिए दूसरों को दोषी ठहराने में।

जैसे मैं एक उदाहरण देता हूं। काफी लोगों को शिकायत होती है कि उनके पुरुष अथवा महिला मित्र ने उनके साथ गलत किया है। वह स्वयं तो उनके साथ अच्छे से पेश आते हैं लेकिन बदले में उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार होता है।

मैं आपसे पूछता हूं कि वह दूसरा व्यक्ति आपके साथ गलत थोड़े ही कर रहा है। क्या वह अकेला इसके लिए जिम्मेदार है। आपने ही तो उसका अपने जीवन के लिए चयन किया है। अगर थोड़ा पहले समझ बूझ लेते तो शिकायत करने का अवसर नहीं मिलता। आपको चयन करने से पहले सोचना समझना चाहिए था। आप किसी को अपनी जिंदगी में स्थान दे रहे हैं तो थोड़ा सब्र रख लो और यदि आपसे ही चयन में गलती हुई है तो दूसरों को दोष देना बंद करिए।

अब अध्यात्म में ही ले लीजिए। जब आप अध्यात्मिक ज्ञान के लिए किसी गुरू का चयन करते हैं तो थोड़ा सावधानी यहां भी बरतनी होगी।

कहा गया है कि

छाछ पीजो छानकर, गुरू कीजो जानकर।

अर्थात् छाछ को हमेशा छानकर ही पीना चाहिए। इसके पीछे कारण है कि छाछ में कई बार मलाई अथवा घी की मोटी परत भी अचानक आ जाती है जो गले में फंसकर दिक्कत पैदा कर सकती है। दूसरा, दूध के चक्कर में कोई सृप जीव उसमें डूबकर मर सकता है। इसलिए छाछ को छान कर पीना चाहिए।

इसी प्रकार गुरू भी जानकर करना चाहिए। क्योंकि कुछ पता नहीं है कि कौन रूप बनाकर बैठा हो। आपको कौन सा मार्ग दिखला दे और कहां आपको भटका दे। गुरू रूप में बहरूपिये आजकल बड़ी संख्या में पाए जा रहे हैं। हमारे धर्मग्रंथों में लिखा गया है कि कलियुग में धर्म के नाम पर बहरूपिये आपको बहकाने भटकाने का काम करेंगे। इसलिए कहा गया है कि आपको गुरू भी जानकर करना है।

गुरू ऐसा होना चाहिए जो परंपरा में हो। जिसके अनुभव आपको पता हो। उसके बारे में अनुभवों को एकत्रित करो और तब गुरू करो।

हालांकि इसके बारे में हमारे सदगुरू वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज ने बड़ा स्पष्ट रूप से कहा है कि वेष का नाम गुरू अथवा साधु नहीं है। वह केवल पहचान है। जिसके आधार पर आप उन्हें सम्मान दे सकते हो लेकिन आपको उनकी पहचान करनी ही पड़ेगी।

यह एक अलग बात है कि हमारे यहां तो गुरू ही शिष्यों की पहचान करते रहे हैं। यह हमारी परंपरा में है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वह अपने शिष्यों को दुनिया के दूसरे छोरों से भी ढूंढ कर ले आते हैं। वह कहते हैं मैं अपने हृदय के तारों को श्री सिद्धदाता आश्रम में एकत्रित कर रहा हूं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि वेष का नाम साधू नहीं है बल्कि साधुता को वरण करने वाले ही वास्तव में साधू हैं। उनके अनुवर्ती गुरू महाराज जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज भी इसी कड़ी को आगे बढ़ा रहे हैं। गुरू जी रामानुज परंपरा में दीक्षित संत हैं। परंपरा कहती है कि रामानुज स्वामी ने भगवान से यह वचन लिया कि वह जिसे भी उनके मार्ग में लगाएंगे, उसे मुक्ति अवश्य ही मिलेगी। इस बात को भगवान ने सहर्ष स्वीकार कर अपने शेष जी को रामानुज स्वामी के रूप में धरती पर भेजा और आज यह उनके एक हजार वर्ष बाद भी परंपरा आम आदमी को भगवान की भक्ति मार्ग में प्रदत्त कर रही है और मुक्ति का साधन बना रही है।

अंत में मैं आपसे कहना चाहता हूं कि जैसे हम छोटी छोटी चीजों, वस्तुओं को अपने लिए लेते समय जांच परखकर लेते हैं। तो जीवन के बड़े से बड़े निर्णय के लिए क्यों दूसरों पर निर्भर होने लगते हैं। हमारे जीवन का निर्णय और कोई क्यों करता है। हम किसी दूसरे के हाथ में अपने आपको क्यों दे देते हैं कि आओ हमारे साथ खेलो। उसके बाद हम जीवन भर उसके खिलाफ शिकायतें करते हैं।

मेरी प्रार्थना है कि आप अपने जीवन में किसी को भी जोड़ रहे हैं तो उसके बारे में खूब सोच समझकर निर्णय करें कि आगे और क्या क्या हो सकता है। बाद में दूसरे को दोष देने से आपकी गलती कम नहीं हो जाएगी। लेकिन थोड़ी सी सावधानी जीवन को गुलिस्तां बना सकती है, यदि चाहो तो। **जय गुरुदेव!**

श्री गुरूजी उवाचः

जो करंसी सरकार ने बंद कर दी

वैकुंठवासी स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

....गत अंक से जारी

जैसे मैं कहा करता हूं कि कुछ समय पूर्व 1000 का नोट चलता था और वह एक हजार का नोट खूब धड़ल्ले से चलता था और रईस लोग 1000 रूपये का नोट ही बड़े बैंक से लेते थे। हम भी उस चक्कर में आ गये। जब सभी बड़े–बड़े घरों वाले एक–एक हजार का नोट ले रहे हैं तो सुदर्शन! तू ही पीछे क्यूं रहे? हमने भी वे नोट ले लिये और रख लिये। अब हम किसी प्रेमी के पास गये कि प्रेमी! ऐसा कर भाई कि हमारे पास एक–एक हजार के नोट हैं, इनका तू हमें क्या दे देगा। हम तो सोच रहे थे कि 1000 के 1500 रूपये तो देगा। वह कहता है महाराज जी! इसका तो एक पैसा भी नहीं मिलेगा। क्यूं भाई? वैसे आप आये हैं मैं 11 या 21 रूपये वैसे दे दूंगा, पर नोटों के बदले एक पैसा नहीं दूंगा। हम तो बड़ी चिन्ता में डूब गये, बड़ी मुश्किल से तो इकट्ठे किये, कैसे कैसे। ये भला आदमी कह रहा है कि एक पैसा नहीं देगा, क्यूं नहीं देगा? बोले, महाराज जी! इन का चलना बन्द हो गया है। क्यों हो गया है? रिजर्व बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर इस पर मौजूद हैं और उसने लिखा है कि 'मैं धारक को एक हजार रूपये अदा करने का वचन देता हूं'। नोट पर मोहर लगी हुई है। हस्ताक्षर

हैं, फिर तू पैसे क्यूं नहीं देता। बोले, महाराज! अब सरकार ने इनका चलन बन्द कर दिया है, इसलिये नहीं मिलता। भाइयो, वे हजार–हजार के नोट हमको फैंकने पड़ गये, कुछ काम नहीं आये, हमारे एक–एक हजार रूपये के नोट।

हरेक वस्तु, क्रिया, उपाय का एक समय अर्थात् चलन होता है, तभी ऐसी चीजें फलदायी होती हैं। समय गुजर जाने के बाद ऐसी चीजों की उपयोगिता समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार जिस समय योग की प्रधानता थी उस समय योग से फल प्राप्त होता था और जब यज्ञ की आवश्यकता थी उस समय यज्ञ भी किये जाते थे।

मेरे प्रेमियो! अब यह चलन बाजार में नहीं है। गीता का विद्वान कोई बैठा हो तो मुझे बता दे कि योग के लिये भगवान ने कहा, अष्टांग योग कहा और अष्टांग योग के बाद सहज योग कहे। उसमें अर्जुन ने अगर कहीं हां की हो तो प्रेमियो! यह बाबाजी चुनौती देकर के जा रहा है, पूरी गीता में अर्जुन ने अगर हां की हो। गीता के विद्वानों को यह चुनौती है कि वे मुझे आकर यह बता दें कि क्या अर्जुन ने कहीं हां की है योग के लिये। बिल्कुल नहीं की, क्योंकि उसके बाद लिखा है, 'उवाच'। और 'उवाच' का अर्थ है कि मुझे स्वीकार या संतुष्टि नहीं, आगे बोलिये। जहां स्वीकार शब्द हो जाता है वहां 'उवाच' शब्द नहीं हुआ करता है। हर जगह 'उवाच' लिखा है उन्होंने। ध्यान योग बताया, फिर उन्होंने अन्य सभी योग बताये पर अर्जुन ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। सहजयोगों का

क्या अर्जुन ने कहीं हा की है योग के लिये। बिल्कुल नही की, क्योकि उसके बाद लिखा है, 'उवाच'। और 'उवाच' का अर्थ है कि मुझे स्वीकार या संतुष्टि नही, आगे बोलिये। जहा स्वीकार शब्द हो जाता है वहा 'उवाच' शब्द नही हुआ करता है।

वर्णन किया, आठ उप–योगों पर बोले पर अर्जुन ने कहीं स्वीकार नहीं किया। कहीं स्वीकार किया हो तो बता दो? अर्जुन ने योगों को स्वीकृति दी ही नहीं, न ध्यान योग पर दी, न सांख्य योग पर दी, न कर्मयोग पर दी। अगर कहीं स्वीकृति दी हो तो विद्वान प्रेमी मुझे लिख कर भेज देना। मैं खुले में चुनौती दे कर जा रहा हूं। श्रीमद् भगवद्गीता के अन्दर योगों पर कृष्ण के कहने पर भी अर्जुन ने हां नहीं किया है। 'हां' क्यों नहीं की? क्योंकि उनको पता था कि भगवान चले जायेंगे, कलिकाल में उनका अस्तित्व नहीं रहेगा। इसलिए उन्होंने हां नहीं की। इसलिये साकार उपासना ही सर्वोपरि है, मेरे प्रेमियो! यही सार्थक भी है।

हमारे भगवान अनादि काल से साकार ही रहते चले आये हैं और साकार ही रहेंगे। निराकार बन कर उन्होंने कोई भी काम नहीं

किया। जो भी काम किया वह साकार बन कर के किया।

'धर्मक्षेत्रे कुरूक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः

(श्रीमद्भगवदगीता 1–1)

साकार युद्ध करवाया और हमें उपदेश भी साकार दिया, निराकार नहीं दिया। उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि मेरा भक्त ही मुझे प्यारा है। ध्यान वाला भक्त नहीं हो सकता, ध्यानी हो सकता है। यज्ञ करने वाला भक्त नहीं हो सकता, वह याज्ञिक कर्म करने वाला निराकारी हो सकता है, भक्त नहीं हो सकता। भक्त साकार पूजा में ही कहा जाता है और भक्ति साकार की ही की जा सकती है।

मेरे प्रेमियो! अनादि काल से एक ही धर्म रहा है। अनेकानेक धर्म हुए ही नहीं। वही एक धर्म था, परमात्मा भी एक है। बाबा नानक साहिब कहते हैं, 'एक ही एक ओंकार'। वह परमात्मा एक ही है और उस का एक ही धर्म है, और वह समदर्शी है। वह अपने धर्म का व्यापार समदृष्टि से करता है। सब के साथ इतना समदर्शी है कि उस परमात्मा ने इस चराचर विश्व में, भूमंडल में, मानव–मानव में कोई भेद नहीं रखा। उसने सभी स्थानों में मानव शरीर की रचना एक जैसी की क्योंकि उसने प्रत्येक मानव की आंखें दो बनाई, अंग्रेजों की छः नहीं बनाईः भारतीयों की भी दो आंखें, नेपालियों की भी दो। कहीं जाओ, आंखें दो ही बनी मिलेंगी। और खाने के लिये ऐसा नहीं कि किसी देश में हीरे, सोना, मोती खाते हों, सब को अन्न ग्रहण करने, सभी को मां की योनि द्वारा पेट में रह कर आना पड़ेगा, चाहे भिखारी हो, चाहे

अनादि काल से एक ही धर्म रहा है। अनेकानेक धर्म हुए ही नहीं। वही एक धर्म था, परमात्मा भी एक है। बाबा नानक साहिब कहते हैं, 'एक ही एक ओंकार'। वह परमात्मा एक ही है और उस का एक ही धर्म है, और वह समदर्शी है।

अरबपति हो, चाहे टाटा हो, चाहे डालमिया हो, चाहे स्वामी सुदर्शनाचार्य हो। जाने का मार्ग एक, आने मार्ग एक, परन्तु अनेकानेक धर्मों की विडम्बनायें हो कर के हमारे भारत वर्ष में आपसी राग द्वेष, वैमनस्यता, झंझट और उपद्रव शुरू कर दिये गये हैं। या मुझे साबित किया जाये कि धर्म एक नहीं, धर्म अनेक होते हैं। यह साबित कर दें वरना तो मैं साबित करके जा ही रहा हूं। हर शास्त्र ने धर्म एक ही बोला–

यदा यदाहि धर्मस्य–एकवचन

(श्रीमद्भगवदगीता 4–6)

जब जब होय धरम की हानि–एकवचन

धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः–एकवचन

(मनुस्मृति 8–15)

तू धर्म की रक्षा कर। तू धर्मों की रक्षा

कर, ऐसा नहीं लिखा। हर तरह से भगवान यही कहते हैं कि मैं धर्म के लिये आता हूं, धर्मों के लिये नहीं कहा। उस एक धर्म को विधर्म बना दिया गया। अनन्य प्रकार के विधर्म बनाकर झगड़े करा दिये गये। कितनी हमारी बुद्धिमत्ता का विषय है, आप विचार कीजिए। और जो सिक्के अब नहीं चलते वे रात दिन चलाये जा रहे हैं। योग सिखाये जा रहे हैं, पातंजलि सूक्त सिखाये जा रहे हैं, ध्यान सिखाये जा रहे हैं, जिनका अस्तित्व है ही नहीं। यह सब हमारे समय की बर्बादी है। समय हमारा सच्चा वही है जिसमें हमने परमात्मा का दर्शन किया, स्पर्श किया, उनके नाम का मनन किया।

एक उदाहरण दिया करता हूं कि एक सेठ जी ने अर्थात् परमात्मा ने कुआं खुदवाया और जनता के लिए वहां चार बाल्टियां रख दी गई कि इन बाल्टियों से पानी खींचो और प्यास बुझाओ। जब कमी देखी तो छः बाल्टियां और रख दीं। और कमी देखी तो 18 बाल्टियां और बढ़ा दीं, गिलास बढ़ा दिये। परन्तु 'मन चंचला' –मेरा मन चंचल है न। उसी कुएं में से पानी खींचा और ले गया और उसमें थोड़ा सा पीला सा रंग डाल दिया, थोड़ा खट्टा डाल दिया और बन्द कर दिया बोतल में और बेचने लग गया। पूछा कि यह क्या है? तो कहा कि साहब! यह है 'फैन्टा'। कितने रूपये का? आठ रूपये का। एक और ने सोचा, यार इसने तो कुएं का पानी लेकर थोड़ा सा रंग आदि मिलाया और फेंटा कह कर आठ रूपये का बेच रहा है और तू टंटा बन रहा है वैसे ही। वह भी बोतल लेकर चला, पानी भर लिया। उसने काला काला डाल दिया। तो बोले, साहब! यह क्या है आपका? अजी, आज तक ऐसी कोई चीज पैदा ही नहीं हुई। यह है कोका कोला। कितने का है? 10 रूपये का। तीसरे ने सोचा कि यह तो मामला बड़ा सरल सा है। यहां तो मुफ्त में पानी पिलाते पिलाते मर गये, दूसरे तो 10 रूपये ले रहे हैं, तू भी कुछ कर। सोचा, अब रंग आदि तो ये सभी मिला रहे हैं, रंग मिलाना तो अच्छा नहीं है। उसने कुछ –कुछ सफेद सा कर दिया और कुछ निम्बू निचोड़ दिये, कुछ चीनी मिला दी। बोले, यह क्या? कहने लगे, यह 'लिम्का' है। कितने का बेचोगे? बोला 11 रूपये का बेचूंगा क्योंकि मेरी बोतल बड़ी है और पानी पी कर देखो आप! उसी कुएं के पानी को फेन्टा बना दिया, कैम्पा बना दिया और पता नहीं क्या–क्या बना दिया। सेठ जी ने विचार किया कि यह मामला तो गड़बड़ हो गया। कुआं बन्द करा दिया। कुआं बन्द होने से पानी को भांति–भांति से रंगकर दुकानकारी चलाने वाले त्रासित हो गये, पानी तो बाहर से आने लग गया परन्तु प्रदूषण फैल गया।

मेरे कहने का भाव यह है कि जो सेठ है वह जगतपति है, मायापति है, काया का पति है, चर अचर का पति है, जीव का पति है, आत्मा का पति है, सब का पति अर्थात् परमात्मा। वही तो सेठ है और कुएं का मतलब है, यह संसार रूपी कुआं और इसमें सुमधुर जल कौन सा जल? भक्ति रूपी जल भर दिया और उसको निकालने के लिए चार बाल्टियां, मेरा मतलब है चार वेद –ऋग्वेद,

यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद– इन चारों वेदों की रचना की। आनन्द लो तुम धर्म का। जब कुछ और कमी पड़ने लगी तो 6 शास्त्र बना दिये, 18 पुराण बना दिए, उपनिषद बना दिये, 27 स्मृतियां बना दीं और ग्रंथ बना दिये जन सुविधा के लिये। पर इतने से हमारा पेट नहीं भरा। लिम्का बनाये बिना, कोका कोला बनाये बिना हमारा गुजारा नहीं हुआ। कैम्पा–कोला, लिम्का आदि तो भगवान ने बन्द कर दिये। बन्द का मतलब है कि वह धर्म की स्वयं भगवान क्षति तो नहीं करते, पर बन्द कर दिया, जिससे हर मनुष्य दुखी है।

मेरे प्रेमियो! एक प्रश्न है। यह बताइये कि सब कुछ खाने के बाद, पैसा कमाने के बाद, तीन मंजिल कोठी बनाने के बाद, नित्य प्रति नई–नई गाड़ियां खरीदने के बाद भी, क्या आत्मा में यह नहीं रहता है कि और चाहिये, और चाहिये। बतायें कि क्या ऐसा नहीं होता कि कुछ कमी है? क्या यह विचार किया मेरे विद्वान प्रेमियों ने कभी? कभी विचार किया कि वह आत्मा क्या चाहती है? एक महिला का पति जब विदेश चला जाता है और वह दो महीने तक समाचार नहीं भेजता, उस महिला से उस बच्ची से पूछो कि उसकी हालत क्या होती है, फड़फड़ाती है और उससे कोई झूठा समाचार आ कर कह दे कि तेरा आदमी मुझे मिला था, एक दो दिन में चिट्ठी भेजेगा, हमें मिला है, बिल्कुल ठीक–ठाक है तो उस दिन वह बड़ी खुशी मनायेगी, मुहल्ले में लड्डू बांटेगी। किस बात के लड्डू बांट रही है बहिन? बोली, बहन! यूं बांट रही हूं कि मेरे पति का समाचार

यह बताइये कि सब कुछ खाने के बाद, पैसा कमाने के बाद, तीन मंजिल कोठी बनाने के बाद, नित्य प्रति नई-नई गाड़ियां खरीदने के बाद भी, क्या आत्मा में यह नहीं रहता है कि और चाहिये, और चाहिये।

आया है आज, मेरा पति विदेश में ठीक है। केवल समाचार मिलने से खुशी हो गई। पति नहीं मिले, समाचार मिला। उसी तरह से आत्मा का पति परमात्मा है, भगवान है जिस से हम दूर हो रहे हैं। उसको केवल ध्यान से समझ रहे हैं, उसे केवल योग से समझ रहे हैं, जब आत्मा को पति का संदेश मिल जाता है कि अब मेरा पति अवश्य आयेगा, क्योंकि उसके नाम की झंकार मेरे तक पहुंचने लग गई है, मुझे आशा लग गई कि मेरा पति मिलेगा ही, उसी दिन से आत्मा खुश हो जायेगी, प्रसन्न हो जायेगी, हंसने लग जायेगी। शरीर स्फुरित हो जायेगा, चुस्त हो जायेगा, सुस्त नहीं रहेगा। आत्मा के पति को तो हम ने देश निकाला कर रखा है और शरीर को खा खा कर के मदोन्मत्त बना रहे हैं। सीएलो गाड़ी में घूम रहे हैं और नई–नई गाड़ी ले रहे हैं। क्या आत्मा से पूछा कि क्या उसको पति की जरूरत है? वह दुःखी है और अपने मोहल्ले में ही रह रही है– दूर हो तो फिर भी

कोई बात है। और मोहल्ले वाले की बात आप नहीं सुनते। क्या मोहल्ले वाले तुम्हें सोने देंगे? यानी क्या आत्मा चित्त तुम्हें सोने देंगे? नहीं सोने देंगे, और उसके पति का मिलन करा दीजिए आप, उसके पति का दीदार उसे करा दीजिए एक बार, उसके बाद 'और' शब्द रहे तो मैं जिम्मेवार।

हर कथा आप लोग सुनते हैं, विद्वानों के द्वारा सुनते हैं पर मेरे प्रेमियो! इसका जरूर ध्यान करना कि आत्मा के पति का नाम उस तक पहुंचा देना। उसके बाद यदि आपकी आत्मा, आपके शरीर को शान्ति न मिले तो कहना कि सुदर्शन निरर्थक, बेकार आदमी है। कथा सुनने से आत्मा को खुशी अवश्य होती है पर चित्त स्थिर नहीं होता और नाम से उसको स्थाई खुशी मिल जाती है। शरीर के उपर का काम रह जाता है। शरीर के उपर का काम रह जाता है। खाना, पीना, टट्टी, पेशाब होता रहता है। इसलिये प्रभु का नाम साकार रूप से ही अति उत्तम है। बाबा नानक साहब ने इस झगड़े को साधारण तरह से मेट दिया।

राम रामा राम रामा राम रामा उर धारिये।

गोबिन्द केशव मदन गोपाल एक खन्न न बिसारिये।

बिनवन्त नानक सर्वे रस कर्ता भोक्ता एक नारायणः।

सार तत्व तो वही है चाहे राम भज, चाहे कृष्ण भज, इसकी मना मैं नहीं कर रहा, पर सार तत्व तो वही है। जब वह सार तत्व आत्मा को मिलेगा, आत्मा खुश होने लग जायेगी, प्रसन्न होने लग जायेगी।

गावो विश्वस्य मातरः
गौ समस्त विश्व की मां है।
गौ की सेवा से अनेक तीर्थों का पुण्य फल प्राप्त होता है।

श्री सिद्धदाता आश्रम की गौशाला में सैकड़ों गौएं रहती हैं। यहां अनेक सेवादार गौसेवा कर पुण्य प्राप्त कर रहे हैं। अनेक व्यक्ति प्रतिदिन चारा आदि का दान करते हैं। आप भी इस पुण्य के भागी बन सकते हैं। यथायोग्य सेवा, चारा, दवाईयां आदि की सेवा आप भी कर सकते हैं। आइये! इस पुण्य कार्य में सहयोग करें।

श्री नारायण गौशाला
फरीदाबाद (हरि.) भारत
संपर्क- राजेंद्र छंगा जी
8860825054

....गुरु की भी मानें

श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
अधिपति – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

गत अंक से जारी...

सब शिष्य सोच रहे हैं मर गया होगा और गुरुजी को कोई चिंता ही नहीं है। कई शिष्यों ने तो विपरीत सोचना शुरू कर दिया। हमें गुरु के सामर्थ्य को समझना चाहिये।

जैसे एक चीफ जस्टिस होली के मूर्ख सम्मेलन में जाये और वहां सामान्य व्यक्ति की तरह व्यवहार करे तो क्या हम समझेंगे कि यह मूर्ख है? नहीं! वो बहुत बुद्धिमान, काबिल और कानून का ज्ञाता है। यह हमारी समझ में रहता है।

और यहां कल्याण को देखो, वो गुरु की इच्छा पर कूद गया। एक शिष्य से रहा नहीं गया बोला- गुरुजी वो कुएं में गिर गया है, वो मर न जाये। उसे बचाने का प्रयास करना चाहये। गुरु को राय दे रहा है शिष्य। मतलब

मैं आपसे ज्यादा दयालु हूं, ज्यादा समझदार हूँ तब गुरुजी ने आवाज लगाई, कल्याण! अंदर से आवाज आई -जी गुरुजी। सबको आश्चर्य हुआ कि यह तो जिंदा है। तू बाहर आ जा ये सब तेरी बहुत चिंता कर रहे हैं। और वो बाहर आ गया। सबको आश्चर्य हुआ यह कैसे बच गया?

फिर से पूछा तू इतने गहरे कुएं में गिर गया था तुझे तो कुछ हुआ ही नहीं। उसने बताया जब मैं कुएं में गिरा मेरी बहुत इच्छा होती थी कि भगवान कब मिलेंगे मैं यही सोचता रहता था। गुरुजी से मन ही मन प्रार्थना करता रहता था। आज जब मैं गुरुजी की इच्छा पूरी करने गया तो कुएं में जब गिरा। एक बार तो पानी में गिरा जब मैं पानी से ऊपर आया तो मैंने क्या देखा, वहां पर पानी का नामो निशान नहीं था। चारों तरफ मणियों का प्रकाश हो रहा था और भगवान राम हाथ में धनुष लिये दिव्य रूप में खड़े थे। मैं उन्हें देखता रहा, देखता रहा, देखता रहा। लेकिन गुरुजी ने जब आवाज दी तो आज्ञा पालन के लिये मुझे आना पड़ा।

इस दृष्टांत से हमें दो चीजें सीखने को मिलती हैं। हम गुरु के आदेश के अनुसार नहीं चलते कि उन्हें किसमें सुख मिलेगा, उनकी इच्छा क्या है? उनकी इच्छाओं का सम्मान नहीं करते। सर्व समर्पण करना है गुरु चरणों में। आत्मा से भी अधिक प्रिय मानना है गुरु को। गुरुदेव को ईष्टदेव भी मानो और अपनी आत्मा भी मानो। तब गुरु कृपा करेंगे और भगवत प्राप्ति होगी।

हम गुरु के आदेश के अनुसार नहीं चलते कि उन्हें किसमें सुख मिलेगा, उनकी इच्छा क्या है? उनकी इच्छाओं का सम्मान नहीं करते। सर्व समर्पण करना है गुरु चरणों में। आत्मा से भी अधिक प्रिय मानना है गुरु को। गुरुदेव को ईष्टदेव भी मानो और अपनी आत्मा भी मानो। तब गुरु कृपा करेंगे और भगवत प्राप्ति होगी।अब आप विचार कीजिये हमें, भगवद प्राप्ति क्यों नहीं होती?

अब आप विचार कीजिये हमें, भगवद प्राप्ति क्यों नहीं होती? हमारी साधना क्यों नहीं बढ़ती? इतना हम चलेंगे, उतनी ही मंजिल पर पहुंचेंगे। जितनी शरणागति होगी उतना ही मिलेगा। गुरु और भगवान के आचरणों पर ध्यान नहीं देना चाहिये, बुद्धि नहीं लगानी चाहिये। उनका हर आचरण जीवों के हित के लिये होता है। समर्थ रामदास दूसरी बातें करने लगे वो शिष्यों का ध्यान हटाना चाहते थे ताकि मन कहीं अन्य लग जाये, तो जो मेरा शिष्य भगवद दर्शन कर रहा है वो अधिकाधिक सुख प्राप्त कर ले। गुरु के आदेश में किसी प्रकार का किन्तु परन्तु नहीं होना चाहिये। हम, हम तो आदेश का पालन भी नहीं करते इच्छा पूर्ति की कौन कहे। यहां तक कि हम ऐसे-ऐसे आचरण करते हैं। जिससे गुरुदेव जी को कष्ट होता है। फिर हम सोचते हैं कि हम आगे क्यों नहीं बढ़ते, साधना आगे क्यों नहीं बढ़ती, भजन में मन क्यों नहीं लगता? यानि करो कुछ मत और मन विषयों में आसक्त रहे। मतलब हम चले न पर घर पहुंच जाये। घर पश्चिम की ओर, और चलेंगे पूरब की ओर!

घर कैसे पहुंचेंगे। इसलिये सभी शास्त्रों और संतों ने कहा है- गुरु कृपा पाने के लिये गुरु शरणागति जरुरी है। गुरु कृपा से ही भगवद कृपा प्राप्त होती है। बिना गुरु के हरी झण्डी दिखाये भगवान कृपा नहीं करते। गाड़ी आगे नहीं बढ़ती, सारा दारोमदार गुरु कृपा पर निर्भर है। गुरु यदि रूठ जाये, गोविंद राधे

कोटि करो भक्ति, हरि अंगूठा दिखा दे
जा पर गुरु कृपा करे गोविंद राधे
वाके पाछे हरि चले सबको बता दे

ऐसा आचरण स्वप्न में भी न करे, जिससे गुरु रूठे। ऐसा आचरण करने का व्रत ले लें, जिससे गुरु प्रसन्न हों। बस फिर क्या है भगवान बस में हो जाएंगे, बिना बुलाये आएंगे। चाहे तुम उनका एक बार भी नाम न लो, फिर भी सिर के बल आएंगे। गुरु भक्ति से वो इतना प्रसन्न होते हैं, इसलिये गुरु शरणागति का हमेशा ख्याल रखना चाहये।

शरणागति का मतलब प्रणाम कर लिया, आरती कर ली, भेंट चढ़ा दी। ये नहीं होता। शरणागति का मतलब है मन बुद्धि का समर्पण। प्रमुख है अपनी बुद्धि को गुरू की बुद्धि से जोड़ देना और जो गुरु ने समझाया है। उसमें कोई संशय किन्तु, परन्तु का प्रयोग स्वप्न में भी नहीं करना। यह है शरणागति का अर्थ। जितनी शरणागति उतनी ही प्राप्ति।

अपने ऐबों पर नजर कर, दिल को पाक कर

हमें यह विचार करना चाहिये गुरु और भगवान कैसे प्रसन्न होंगे? दुनिया की निंदा स्तुति पर ध्यान मत दो अपना अंतकरण टटोलते रहो, और दोषों को ठीक करने का प्रयत्न करते रहो।

मान, सम्मान, प्रतिष्ठा चाहने से बचो। यह ले डूबती हैं। हमारे अंदर अहंकार नहीं आये। हमें हमेशा अपना आंकलन करना चाहिये, हम कहां हैं? हमारे अंदर कितना परिवर्तन हुआ है? और निरंतर प्रयास करते रहना चाहिये। वही गुरु का शिष्य है, वही गुरु भक्त है।

श्री सुदर्शन संदेश के सदस्य बनें और दूसरों को भी सदस्य बनाएं

'श्री सुदर्शन संदेश' के सदस्य बनकर भगवान श्रीमन् नारायण के लीला चरित्, श्री गुरु महाराज जी के आध्यात्मिक प्रवचन, विचार व अन्य आध्यात्मिक शास्त्रीय जानकारी घर बैठे प्राप्त करें। आपको श्री सिद्धदाता आश्रम द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूचना व समाचार भी निरंतर प्राप्त हो सकेंगे।

एक पत्रिका का मूल्य 15 रूपये है।
वर्ष का मूल्य 180 रूपये बनता है।
लेकिन आप वार्षिक शुल्क केवल 100 रूपये देकर इसके सदस्य बन सकते हैं।

पैकिंग और पोस्टिंग का खर्च भी नहीं लिया जाता है। यह आपको करीब आधे खर्च में घर बैठे प्राप्त होगी।

सम्पर्क करें :

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्य धाम, श्री सिद्धदाता आश्रम,
बडखल-सूरजकुण्ड मार्ग, फरीदाबाद - 121003

दूरभाष 8383821967 नारंग जी
7838169040 प्यारेलाल जी

E-mail shrisidhdataashram.org@gmail.com
website www.sidhdataashram.org
www.sda.org

भगवान के नाम से शुरू हो नववर्ष

श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज
अधिपति – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

आप सभी को नववर्ष की शुभकामनाएं। मंगलकामनाएं।

हम सभी नववर्ष के आगमन का धूमधाम से स्वागत करते हैं। कुछ लोग एक दिन पहले ही रात्रि को नववर्ष के आरम्भ पर अपने अपने तरीके से पार्टी करते हैं। मौज मस्ती करते हैं।

पर मेरे प्रेमियो! हमारा नववर्ष का शुभ दिन वो ही है, जिसकी शुरुआत ही भगवान के नाम से हो। वो ही शुभ दिन है।

जो वर्ष के प्रथम दिवस पर भगवान के दर्शन करते हैं। गुरु दर्शन करते हैं। सेवा करते हैं और भगवान का नाम लेते हैं।

क्योंकि संत कहते हैं कल हो ना हो।

इसलिए शुभ कर्म में विलम्ब नहीं करना चाहिए।

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब
पल में प्रलय होयगी, बहुर करेगो कब।
किसी कवि ने कहा है -
क्षण भंगुर जीवन की कलिका
कल प्रात: को जाने खिली न खिली।
मलयाचल मंद सुगंध पवन,
कल प्रात: को जाने चली न चली।
कलिकाल कुठार लिए फिरता
तन नम्र पर चोट झिली न झिली
रट ले हरि नाम अरि रसना
कल प्रात: को जाने हिली न हिली।
श्वास श्वास में हरि भज, वृथा श्वास मत खोय
ना जाने इस श्वास का, फिर आवन होय न हो।

मेरे प्रेमियो! वैसे तो आज खुशी का दिन है। हम नववर्ष के आगमन का धूमधाम से स्वागत करते हैं पर हम विचार करें तो इसका दूसरा पहलू यह भी है कि हमारे जीवन का एक वर्ष और कम हो गया है।

हमें आत्म चिंतन करना चाहिए। हमने क्या खोया और क्या पाया। और जो हम नहीं कर पाये उसके लिए हमें संकल्प लेना चाहिए। लेकिन सबसे पहले हमें यह जानना चाहिए कि हम वास्तव में हैं क्या और यहां करने क्या आए हैं।

श्रीमद् भगवद्गीता में भगवान ने कहा है कि यह जीव साक्षात् मेरा ही अंश है-

ममैवांशो जीवलोके जीवभूत: सनातन:।

यह मेरा अंश यहां जीवलोक अर्थात् संसार में आकर जीव बना है। और-

यदगत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।

मेरा परमधाम ऐसा है, जहां जाने के बाद वापस लौट कर आना नहीं पड़ता। तो फिर जीव को भगवान के धाम के धाम में जाना चाहिए। जैसे कोई संतान अपने पिता के घर जाती है। इसी प्रकार जीव को भगवान के धाम में जाना चाहिए।

जीव पुन: संसार में लौटकर कर क्यों आता है ?

अब आप ध्यान देकर इस प्रश्न का उत्तर सुनें।

जैसे आप हम सभी यहां सत्संग के लिए आए हैं और समय पूरा होने पर यहां से चल देंगे। यदि जाते समय हमारी चद्दर भूल से यहां छूट गई या कोई भी चीज यहां रह गई तो हमें उसे लेने के लिए वापस आना पड़ेगा। इसी तरह जीवन ने इस संसार की जिन-जिन चीजों में ममता कर ली है, चाहे वह घर, परिवार, जमीन, रुपए कुछ भी हों, उनके छूटने पर ममता के कारण इसे लौटकर आना पड़ता है।

संसार में जिन वस्तुओं को अपना माना है। वहां लौट कर आना पड़ेगा। यह शरीर तो सदा रहेगा नहीं, अत: दूसरा शरीर धारण करके आना पड़ेगा। चाहे किसी भी योनि में जन्म ले, उसे फिर उन वस्तुओं के पास आना पड़ेगा।

हमने एक कथा सुनी है। एक बार श्री गुरु नानक जी महाराज कहीं जा रहे थे। उनके साथ उनके दो-चार शिष्य भी थे। किसी शहर की धान-मंडी में होकर निकले। धान मंडी में गेहूं, जौं, बाजरा, मोठ, चना आदि अनाज के बहुत से से ढेर पड़े थे। इतने में एक बकरा आया और एक मोठ की ढेरी मे से खाने लगा। वहां पर उसे ढेरी का मालिक बैठा था। उसने बकरे के बाल पकड़ लिए और उसके मुंह पर डंडे मारने लगा। काफी मारपीट के बाद उसने उसके मुंह से दाने निकाल लिए।

इस दृश्य को देखकर श्री गुरु नानक जी महाराज हंसे। साथ में चल रहे शिष्यों को आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा महाराज बकरे के तो मार पड़ रही है और आप हंस रहे हैं।

संतों की हर क्रिया किसी प्रयोजन को लेकर होती है।

अत: महाराज हमें बताएं, आप हंसे क्यों? तभी श्री नानक महाराज बोले, देखो जो मार रहा है। वह बनिया है। उस बकरे का बेटा है। और बकरा उस बनिए का बाप। इससे पहले के जन्म में यह इस दुकान का मालिक था। इस दुकान में इसके बैठने का स्वभाव था। भीतर दुकान और बाहर जो यह बरामदा है, इसी में यह बैठा रहता था। इसीलिए आजकल भी रात में यह बकरा यहां ही बैठता है। उसको याद नहीं है। लेकिन इसको यही जगह अच्छी लगती है। इतने बड़े-बड़े देवताओं की मन्नत करके इस पुत्र को पाया। कमाया हुआ धन इसी बकरे का है। लेकिन आज थोड़े से दाने में भी इसका हिस्सा नहीं है। खाने के लिए आता है तो मार पड़ती है और मुंह से निकाल लिए जाते हैं। लोग फिर भी संग्रह करते हैं।

यह जीव किसी भी वस्तु या जगह में आसक्ति, प्रियता या वासना रखेगा उसे मृत्यु के बाद चाहे कोई भी योनि मिले, उसी जगह आना पड़ेगा। पशु-पक्षी, चिडिया, चूहे आदि उसी घर में जाते हैं, जिसमें पूर्व में राग था।

जनम जनम मुनि जतन करावहिं
अन्तकाल राम मुख आवत नाहिं।

कारणं गुण सङ्गोडस्य सद सद्योनिजन्मसु।

ऊंच-नीच योनियों में जन्म होने के कारण है- गुणों का संग, आसक्ति, प्रियता, वासना। जो जड़ चीजों में प्रियता रखेगा, उसको लौटकर आना पड़ेगा। जिसकी जड़ वस्तुओं में आसक्ति या प्रियता नहीं और भगवान के साथ प्रेम है, वह भगवान को प्राप्त हो जाता है। इतनी विलक्षणता है कि अनंतकाल में भी भगवान का स्मरण करने वाला निसंदेह भगवान को प्राप्त हो जाता है। अंतकाल में भी याद कर ले तो बेड़ा पार है।

अन्तकाले च माम् एव स्मरन् उक्त्वा कलेवरम्
य: प्रयाति स मद्भावं याति न अस्ति अत्र संशय: ॥

अंतकाल के स्मरण से भी यह जीव भगवान को

ऊंच-नीच योनियों में जन्म होने के कारण है- गुणों का संग, आसक्ति, प्रियता, वासना। जो जड़ चीजों में प्रियता रखेगा, उसको लौटकर आना पड़ेगा। जिसकी जड़ वस्तुओं में आसक्ति या प्रियता नहीं और भगवान के साथ प्रेम है, वह भगवान को प्राप्त हो जाता है। इतनी विलक्षणता है कि अनंतकाल में भी भगवान का स्मरण करने वाला निसंदेह भगवान को प्राप्त हो जाता है। अंतकाल में भी याद कर ले तो बेड़ा पार है।

प्राप्त हो जाता है। क्योंकि इसका भगवान से घनिष्ठ संबंध है। भगवान का अंश होने के कारण यह भगवान के सम्मुख होते ही भगवान को प्राप्त हो जाता है। इसमें संदेह की कोई बात नहीं फिर यह लौट कर कर क्यों आता है? इसमें खास कारण यह है कि संसार की चीजों में अपनापन कर लेने से इसको विवश होकर यहां आना पड़ता है। इस (जीव) का मन संसार में खिंच जाता है तो भगवान फिर वैसा ही मौका दे देते हैं अर्थात् जन्म दे देते हैं।

इसलिए जीव को उचित है कि यहां रहता हुआ भी निर्लेप रहे। भीतर में ममता आसक्ति करके फंसे नहीं।

शिष्य पूछता है? 'बंद्धो ही कौ' बंधा हुआ कौन है?

गुरुदेव उत्तर देते हैं -यो विषयानुरागी। जो विषय आसक्त वो ही बंधा हुआ है।

शरीर से किन्हीं प्राप्त पदार्थों को छोडक़र अलग हो जाए, वही त्याग है। मन का असंग हो जाना वैराग्य है। असंग है कमल-

न जग छोडो न हरि भूलो, कर्म कर जिंदगानी में

रहो दुनियां में तुम ऐसे, कमल रहता जैसे पानी में

कमल वैराग्य का उदाहरण है। जल में रहकर भी जल में डूबता नहीं।

एक महात्मा रेलगाड़ी में बैठे फर्स्ट क्लास के डिब्बे में। उनका रिजर्वेशन था। आगे स्टेशन पर गाड़ी रुकी। वहां से एक सज्जन चढ़े। उनका भी फर्स्ट क्लास में रिजर्वेशन था। जितना महात्मा जी का सामान था, उतना ही उन सज्जन का। महात्मा जी को देखा, सामान देखा, बस फिर सेठजी ने उपदेश देना शुरू किया कि कलियुग आ गया है। बिगड़ गए हैं महात्मा। इनको क्या जरूरत है रेल में बैठने की। ये तो पैदल चलें, और वो भी फर्स्ट क्लास में, और ये सामान। राम-राम-राम- महात्मा ने हाथ जोड़े, सेठ जी आज आपने हमारी आंखें खोल दीं।

सेठ जी बोले- सत्संग से तो आंख खुलती ही है। दोनों में मित्रता हो गई। अब अगले स्टेशन पर गाड़ी खड़ी हुई, महात्मा बोले- चलो पानी पी आये, बोला - महाराज हमारा सामान रखा है।

बोले- चिन्ता नहीं करो, हमारा भी उतना ही रखा है। आओ। गए, पानी पीया, बैंच पर बैठ गए। अब रेलगाड़ी चलने को हुई, गार्ड ने झंड़ी दिखाई। सेठ जी का हाथ पकड़ लिया महात्मा ने, सेठ बोला- महाराज गाड़ी जा रही है।

महात्मा बोला-जाने दो गाड़ी जाती रहती है, अरे महाराज सामान रखा है। महात्मा फिर बोले -जाने दो उतना ही हमारा रखा है। हममें और तुम में क्या अंतर है। कपड़े का? कपड़ा हम दें देंगे, तो दोबारा बोला -महाराज मेरा हाथ छोड़ो, मेरा हाथ छोड़ो।

महात्मा बोले -अब नहीं छोड़ेंगे, तुमने उपदेश दिया है। नहीं तो अंतर बताओ। वो बोला-हाथ छोड़ो, अंतर हम समझ गए। क्या अंतर यही है, जितना सामान आपके पास है, उतना ही सामान हमारे पास है, लेकिन आप एक क्षण में छोड़ सकते हैं। हम जिंदगी में नहीं छोड़ सकते। यही अंतर है।

इसलिए कौन कहां रह रहा है, मोल इसका नहीं है, कौन कैसे रह रहा है, मूल्य इसका है। इसलिए मैं आपको एक निवेदन करूं, महाराज मनु को घर छोडक़र वन में जाना पड़ा, पर उसी रामचरित मानस में वर्णन है कि जनक जी को घर छोडक़र कहीं नहीं जाना पड़ा। क्यों? क्योंकि महाराज मनु के जीवन में वैराग्य नहीं है। इसलिए उन्हें त्याग करना पड़ा। पर जनक जी में वैराग्य है। जिन्हें वैराग्य हो, उन्हें घर छोडक़र वन में जाने की आवश्यकता नहीं है। और जिनके मन में वैराग्य नहीं है, उन्हें त्याग करना चाहिए।

शरीर का त्याग मुक्ति नहीं है, मृत्यु है, क्योंकि मुक्ति शरीर छोडऩे से नहीं मिलती। मुक्ति तो मन की असंगता से प्राप्त होती है। वैराग्य है नहीं, अब करें क्या? और वैराग्य के बिना दु:ख की निवृत्ति नहीं है। अब विचार करो, सारे सुख होने के बाद ही महाराज मनु सुखी नहीं हुए तो हम कैसे सुखी हो जाएंगे। कामना की पूर्ति में सुख नहीं है। कामना की निवृत्ति में सुख है। जैसे-भक्त प्रहलाद ने भगवान से वर मांगा, कि मेरी सारी कामनाएं समाप्त हो जाए। एक महात्मा कहते थे-

चाह पैसों से आनों में आती रही
चाह आनों से रुपया बनाती रही
चाह रुपयों से नोट भुनाती रही
चाह नोटों से कोठी चुनाती रही
चाह कोठी में मोटर मंगाती रही
चाह मोटर से होटल में जाती रही
चाह होटल में बोतल खुलाती रही
चाह क्या-क्या न करती कराती रही
चाह पाली जिन्होंने पीले हो गए
चाह छोड़ी जिन्होंने रसीले हो गए
चाह जर से लगी जी जरजरा हो गया
चाह हरि से लगी जी हरा हो गया

चाह उनकी हमको हर दम चाहिए
वो अगर चाहें तो फिर क्या चाहिए

हमारे जीवन में तीनों हैं, इच्छा पूरी न हो तो दु:ख और इच्छा पूरी हो जाए तो थोड़ी देर का सुख और इच्छा ही न रहे तो आनंद है। कोई कामना ही नहीं रही। लेकिन इच्छा, कामना अगर है तो परेशान करेगी।

अगर चाहते तो सुख सदा जिंदगी से
तो कभी आशा न रखना किसी से

एक महात्मा से किसी ने कहा- कि महाराज हमारी एक इच्छा है, सिर्फ शांति मिले। शांति मिले। महात्मा बोले- शांति की इच्छा मत करो, इच्छा को शांति करो। और इच्छा शांत होगी कैसे?

मनु महाराज ने पुत्र को राज्य देकर वन में गमन किया। पर आजकल पुत्र जबरदस्ती ले लेता है। अच्छा एक बात बताओ- बर्खास्त होने से इस्तीफा देना अच्छा है या नहीं? इज्जत बनीं रहेगी। हमें लगता है मौत कान पकडक़र बर्खास्त करें उससे पहले की इस्तीफा दे देना ही अच्छा है।

मौत से पहले संसार से छूट जाना
अवसर है अनमोल काम कुछ ऐसा कर जा
पाकर गुरु से ज्ञान यार मरने से पहले मर जा
अपने घर में बैठ निरंजन ना किसी के घर जा
सीता-राम सुमर निरंतर भवसागर से तर जा

ऐसा मानें कि ठाकुर जी का संसार है, ठाकुर जी का परिवार है, ठाकुर जी के रुपए है, ठाकुर जी का घर है, हम तो ठाकुर जी का काम करते हैं। मुनीम की तरह रहें। मालिक न बनें जो काम करें, उसका एहसान ठाकुर जी पर रखें कि महाराज हम आपका काम करते हैं। हमारा यहां क्या है, परिवार आपका, घर आपका, धन आपका, जमीन आपकी, यही सच्ची बात है क्योंकि जब जन्मे थे नंग-धडंग आए थे। एक धागा भी पास में नहीं था और जब मरेंगे तो यह लाश भी यहीं पड़ी रहेगी।

ऐसा मानें कि ठकुर जी का संसार है, ठकुर जी का परिवार है, ठकुर जी के रुपए है, ठकुर जी का घर है, हम तो ठकुर जी का काम करते हैं। मुनीम की तरह रहें। मालिक न बनें जो काम करें, उसका एहसान ठकुर जी पर रखें कि महाराज हम आपका काम करते हैं। हमारा यहां क्या है, परिवार आपका, घर आपका, धन आपका, जमीन आपकी, यही सच्ची बात है क्योंकि जब जन्मे थे नंग-धडंग आए थे।

लाश को भी साथ नहीं ले जा सकते तो धन-संपत्ति, वैभव परिवार साथ में ले जा सकेंगे क्या?

साथ में लाए नहीं, साथ में ले जा सकते नहीं और यहां रहते हुए भी इन सबको अपने मन मुताबिक बना सकते नहीं, आपका प्रत्यक्ष अनुभव है कि आपके लडक़े-लडक़ी आपको कहना नहीं मानते, स्त्रियां नहीं मानती, कुटुंबीजन नहीं मानते तो यह सिद्ध हुआ कि आप इनको अपने मन मुताबिक नहीं बना सकते और जितने दिन चाहे साथ में रख नहीं सकते, बदल नहीं सकते। स्वभाव बदल दे या रंग बदल दे, यह आपके हाथ की बात नहीं। फिर भी इनको कहते हैं मेरी चीजें।

यह मेरे कैसे हुए बताइए अत: मानना ही होगा कि यह सब मेरे नहीं हैं। भगवान के दिए हुए हैं और भगवान के हैं। संसार की सभी चीजों को भगवान की मानें। अब भगवान का काम करो, चिंता, भय कुछ नहीं रहेगा।

संतों ने कहा है कि अगर भगवान से मिलना हो तो साथ में साथी नहीं होना चाहिए और सामान भी नहीं होना

चाहिए अर्थात् साथी और सामान के बिना उनसे मिलो। जब साथी, सहारा साथ में है तो तुम क्या मिले भगवान से? और मन, बुद्धि, विद्या, धन आदि सामान साथ में बंधा रहेगा तो उसका पर्दा (व्यवधान)रहेगा। परदा में थोड़े ही होता है? वहां तो कपड़े का भी व्यवधान होता है। कपड़ा ही नहीं, माला भी आड़ में आ जाए तो मिलन क्या हुआ? इस वास्ते साथ में कोई साथी और सामान ना हो तो भगवान से जो मिलन होगा, वह बड़ा विलक्षण और दिव्य होगा।

एक महात्मा जी को खेत में काम करने वाला एक बृजवासी ग्वाला मिल गया। वह भगवान का भक्त था। महात्मा जी ने उससे पूछा तुम क्या करते हो? उसने कहा हम तो अपने लाला कन्हैया का काम करते हैं। महात्मा जी ने कहा- हम भगवान के अनन्य भक्त हैं, तुम क्या हो? उसने कहा हम फनन्य भक्त हैं। महात्मा जी ने पूछा- फनन्य भक्त क्या होता है? तो उसने भी पूछा- अनन्य भक्त क्या होता है? महात्मा जी ने कहा- अनन्य भक्त वह होता है जो सूर्य, शक्ति, गणेश, ब्रह्मा आदि किसी को भी ना माने केवल हमारे कन्हैया को माने। उसने कहा- बाबाजी, हम तो इन ससुरों का नाम भी नहीं जानते कि यह क्या होते हैं, क्या नहीं होते, हमें इनका पता ही नहीं है, तो हम फनन्य हो गए कि नहीं? इस प्रकार ब्रह्म क्या होता है? आत्मा क्या होती है? सगुण और निर्गुण क्या होता है? साकार और निराकार क्या होता है? इत्यादि बातों की तरफ शरणागत भक्त का ख्याल ही नहीं होना चाहिए।

शरणागत भक्त को भजन भी नहीं करना पड़ता। उसके द्वारा स्वत: स्वाभाविक भजन होता है। भगवान का नाम उसे स्वाभाविक ही बड़ा मीठा, प्यारा लगता है। अगर कोई तुमसे पूछे कि तुम श्वास क्यों लेते हो? यह हवा को भीतर-बाहर करने का क्या धंधा शुरू कर लिया रखा है। तो यही कहेंगे कि भाई! यह धंधा नहीं है, इसके बिना तो हम जी ही नहीं सकते। ऐसे ही शरणागत भक्त भजन के बिना रह ही नहीं सकता। जिसको सब कुछ अर्पित कर दिया उसके विस्मरण में परम व्याकुलता, महान छटपटाहट होने लगती है- 'तद्विस्मरणे परम व्याकुलतेति' (नारदभक्ति सूत्र 19)

ऐसे भक्त से अगर कोई कहे के आधे क्षण के लिए भगवान को भूल जाओ तो दिल्ली का राज्य मिलेगा तो वह इसे भी ठुकरा देगा।

भागवत में आया है-

त्रिभुवनविभवहेतवे अपि अकुण्ठस्मृति:
अजितआत्मसुरआदिभि: विमृग्यात्।
न चलति भगवत् पद अरविन्दात्
लवनिमिष अर्धम् अपि य: स: वैष्णव अग्र्य: ॥53॥

'तीनों लोकों के समस्त ऐश्वर्या के लिए भी उन देव दुर्लभ भगवच्चरण कमलों को जो आधे निसेध के लिए भी नहीं त्याग कर सकते। वे ही श्रेष्ठ भगवत भक्त हैं।'

न पारमेष्ठ्यं न महेंद्रधिष्ण्यं न सार्वभौमं न रसाधिपत्यम् ।

न योगसिद्धीरपुनर्भवं वा मय्यर्पितात्मेच्छति मद्विनान्यत् ॥ 14 ॥

'भगवान कहते हैं कि स्वयं को मेरे अर्पित करने वाला भक्त मुझे छोडक़र ब्रह्मा का पद, इंद्र का पद, संपूर्ण पृथ्वी का राज्य, पातालादि लोकों का राज्य, योग की समस्त सिद्धियां और मोक्ष को भी नहीं चाहता।'

भरत जी कहते हैं-

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम-जनम रति राम पद यह बरदानु न आन। ॥

अर्थात मुझे अर्थ की रुचि (इच्छा) है, न धर्म की, न काम की, और ना में मोक्ष ही चाहता हूं। जन्म-जन्म में मेरा श्रीराम जी के चरणों में प्रेम हो, बस यही, वरदान मांगता हूं, दूसरा कुछ नहीं।

तुम्हहि निबेदित भोजन करहीं।
प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं।।

(रामचरितमानस अयोध्या 129/2)

भोजन नहीं, ठाकुर जी के भोग लगाया हुआ प्रसाद पावें, गहने-कपड़े कुछ भी धारण करें तो प्रभु का प्रसाद मानकर धारण करें। प्रभु के प्रसाद का बड़ा माहात्म्य है। अंत:करण निर्मल हो जाता है। ममता आसक्ति सब मिट जाती है, ठाकुर जी के आप थोड़ा सा पेड़ा या बतासा का भोग लगावें, यह परम-पवित्र हो जाता है। लखपति और करोड़पति भी आपके हाथ से उस प्रसाद का एक दाना लेना चाहेंगे और बड़े प्रसन्न होंगे, क्या वह मिठाई के भूखे हैं? नहीं, वे ठाकुर जी का प्रसाद लेते हैं क्योंकि अब आप की ममता नहीं रही। चाहे वह आप ही बांटे, लेकिन वह आपका नहीं, ठाकुर जी का है।

आप भाई-बहन कृपा करो, अभी अपनी सभी चीजों को भगवान की मान लो। ह्रदय से मान लो, हे नाथ यह सब कुछ आपका है। गहना, कपड़ा, भोजन, मकान आदि सब कुछ प्रभु का प्रसाद है। अब भगवान की मर्जी हो, वहां रखो। हम लौट कर क्यों आएंगे। हमारी कहीं ममता नहीं, कोई हमारा है नहीं, ऐसे कृपा करके भगवान को सब कुछ दे दो। वास्तव में सबकुछ भगवान का ही है, हमने उसको अपना माना है। केवल मान्यता छोडनी है।

एक महात्मा ने बड़े सरल शब्दों में इसका अनुवाद किया जग की सेवा, खोज अपनी, प्रीत प्रभु से कीजिए। जग की सेवा, खोज अपनी, प्रीत प्रभु से कीजिए, जिंदगी का राज है यह जानकर जी लीजिए इसीलिए श्री रामकृष्ण परमहंस जी के पास कोलकाता शहर से एक भक्त आए प्रणाम किया बैठे और बोले के बाबा सुना है, काली माता आपको दर्शन देती है बाबा ने कहा अगर देती हो तो व्यक्ति बोला मेरा निवेदन यह है कि काली माता जब आप के पास दर्शन देने आए तो उन्हें आप हमारे पास

आप भाई-बहन कृपा करो, अभी अपनी सभी चीजों को भगवान की मान लो। ह्रदय से मान लो, हे नाथ यह सब कुछ आपका है। गहना, कपड़ा, भोजन, मकान आदि सब कुछ प्रभु का प्रसाद है। अब भगवान की मर्जी हो, वहां रखो। हम लौट कर क्यों आएंगे। हमारी कहीं ममता नहीं, कोई हमारा है नहीं, ऐसे कृपा करके भगवान को सब कुछ दे दो। वास्तव में सबकुछ भगवान का ही है, हमने उसको अपना माना है।

भेज देना। श्री परमहंस जी ने कहा कि अवश्य भेज देंगे पर तुम अपना पता दे दो उस व्यक्ति ने अपना पता लिखवाया इस गली में इस मकान में यह हमारा पता है परमहंस जी मुस्कुरा कर बोले -यह तो तुम्हारे मकान का पता है और माता से तो तुम मिलना चाहते हो। हम तुम्हारा पता पूछ रहे हैं तो उसने दुकान का पता बताया। श्री परमहंस जी ने फिर कहा कि हम तो तुम्हारा पता पूछ रहे हैं। यह तो तुम्हारी दुकान का पता है। अब वह बड़ा हैरान हुआ क्योंकि वह दुकान के पत्ते को अपना पता समझता था। अब वह हैरान हुआ और बोला मैं तो यह रहा। अपनी छाती पर हाथ रख कर बोला, मैं तो यह रहा, यह बैठा। श्री परमहंस जी ने कहा -यह हाथ तो तुम्हारी छाती की सूचना दे रहा है। अब वह यह कहे कि मैं क्या बताऊं, यह मेरा सर है। अपना पता बताने में असमर्थ श्री परमहंस जी ने कहा कि जिस दिन तुम अपना पता जान लोगे तुम्हें काली माता वहीं उपस्थित मिलेगी।

क्रमश: जारी

पंचांग

कलियुग वर्ष ५१२३, विक्रम संवत २०७८, श्री शालिवाहन संवत १९४३, आनंद नामक संवत्सर, उत्तरायण, हेमंत ऋतु (समय घंटे/मिनट में हैं तथा सूर्यास्त के अतिरिक्त दो. १२ उपरांत के समय १३, १४... इस प्रकार हैं।)

जनवरी	पौष-माघ	तक	नक्षत्र	तक	योग	तक	करण	तक	चंद्र राशि प्रवेश		सूर्योदय	सूर्यास्त
१ शनि	कृ.प. १३	०७.१८	ज्येष्ठा	१९.१७	गंड	१३.५५	विष्टि	१७.३१	धनु	१९.१७ उ.	६.४५	५.१८
	कृ.प. १४	२७.४२										
२ रवि	अमावस्या	२४.०४	मूल	१६.२३	वृद्धि	०९.४२	चतुष्पाद	१३.५३	धनु		६.४५	५.१९
					ध्रुव	२९.२९						
३ सोम	शु.प. १	२०.३२	पू.षा.	१३.३३	व्याघात	२५.२४	किंस्तुघ्न	१०.१६	मकर	१८.५२ उ.	६.४५	५.१९
४ मंगल	शु.प. २	१७.१९	उ.षा.	१०.५७	हर्षण	२१.३६	बालव	०६.५३	मकर		६.४६	५.२०
							तैतिल	२७.५३				
५ बुध	शु.प. ३	१४.३५	श्रवण	०८.४६	वज्र	१८.१४	वणिज	२५.२७	कुंभ	१९.५४ उ.	६.४६	५.२१
६ गुरु	शु.प. ४	१२.३०	धनिष्ठा	०७.११	सिद्धि	१५.२४	बव	२३.४४	कुंभ		६.४६	५.२१
			शतभिषा	३०.२०								
७ शुक्र	शु.प. ५	११.११	पू.भा.	३०.२०	व्यतिपात	१३.११	कौलव	२२.५०	मीन	२४.१५ उ.	६.४६	५.२२
८ शनि	शु.प. ६	१०.४४	उ.भा.	अहोरात्र	वरीयान	११.३९	गरज	२२.५०	मीन		६.४६	५.२३
९ रवि	शु.प. ७	११.०९	उ.भा.	०७.१०	परिघ	१०.४८	विष्टि	२३.४१	मीन		६.४७	५.२४
१० सोम	शु.प. ८	१२.२५	रेवती	०८.४९	शिव	१०.३६	बालव	२५.१९	मेष	०८.४९ उ.	६.४७	५.२४
११ मंगल	शु.प. ९	१४.२२	अश्विनी	११.१०	सिद्ध	१०.५५	तैतिल	२७.३३	मेष		६.४७	५.२५
१२ बुध	शु.प. १०	१६.५०	भरणी	१४.००	साध्य	११.३७	वणिज	३०.१०	वृषभ	२०.४६ उ.	६.४७	५.२६
१३ गुरु	शु.प. ११	१९.३३	कृत्तिका	१७.०७	शुभ	१२.३४	बव	अहोरात्र	वृषभ		६.४७	५.२७
१४ शुक्र	शु.प. १२	२२.२०	रोहिणी	२०.१८	शुक्ल	१३.३५	बव	०८.५७	वृषभ		६.४७	५.२७
१५ शनि	शु.प. १३	२४.५८	मृग	२३.२१	ब्रह्मा	१४.३२	कौलव	११.४०	मिथुन	०९.५१ उ.	६.४७	५.२८
१६ रवि	शु.प. १४	२७.१९	आर्द्रा	२६.०९	ऐंद्र	१५.१९	गरज	१४.११	मिथुन		६.४७	५.२९
१७ सोम	पूर्णिमा	२९.१८	पुनर्वसु	२८.३७	वैधृति	१५.५२	विष्टि	१६.२२	कर्क	२२.०२ उ.	६.४७	५.३०
१८ मंगल	कृ.प. १	अहोरात्र	पुष्य	३०.४२	विष्कंभ	१६.०८	बालव	१८.०९	कर्क		६.४६	५.३०
१९ बुध	कृ.प. १	०६.५४	श्लेषा	अहोरात्र	प्रीति	१६.०५	तैतिल	१९.३३	कर्क		६.४६	५.३१
२० गुरु	कृ.प. २	०८.०६	श्लेषा	०८.२४	आयुष्मान	१५.४४	वणिज	२०.३२	सिंह	०८.२४ उ.	६.४६	५.३२
२१ शुक्र	कृ.प. ३	०८.५२	मघा	०९.४३	सौभाग्य	१५.०४	बव	२१.०७	सिंह		६.४६	५.३३
२२ शनि	कृ.प. ४	०९.१५	पूर्वा	१०.३८	शोभन	१४.०६	कौलव	२१.१७	कन्या	१६.४८ उ.	६.४६	५.३३
२३ रवि	कृ.प. ५	०९.१३	उत्तरा	११.०९	अतिगंड	१२.४९	गरज	२१.०२	कन्या		६.४६	५.३४
२४ सोम	कृ.प. ६	०८.४४	हस्त	११.१५	सुकर्मा	११.११	विष्टि	२०.२०	तुला	२३.०८ उ.	६.४५	५.३५
२५ मंगल	कृ.प. ७	०७.४९	चित्रा	१०.५४	धृति	०९.१२	बालव	१९.११	तुला		६.४५	५.३६
	कृ.प. ८	३०.२६										
२६ बुध	कृ.प. ९	२८.३५	स्वाती	१०.०६	शूल	०६.५१	तैतिल	१७.३४	वृश्चिक	२७.१२ उ.	६.४५	५.३६
					गंड	२८.०८						
२७ गुरु	कृ.प. १०	२६.१७	विशाखा	०८.५१	वृद्धि	२५.०३	वणिज	१५.२९	वृश्चिक		६.४४	५.३७
२८ शुक्र	कृ.प. ११	२३.३६	अनुराधा	०७.१०	ध्रुव	२१.४०	बव	१२.५९	धनु	२९.०७ उ.	६.४४	५.३८
			ज्येष्ठा	२९.०७								
२९ शनि	कृ.प. १२	२०.३८	मूल	२६.४९	व्याघात	१८.०२	कौलव	१०.०९	धनु		६.४४	५.३९
३० रवि	कृ.प. १३	१७.२९	पू.षा.	२४.२३	हर्षण	१४.१५	गरज	०७.०४	मकर	२९.४६ उ.	६.४३	५.३९
							विष्टि	२७.५४				
३१ सोम	कृ.प. १४	१४.१९	उ.षा.	२१.५७	वज्र	१०.२५	चतुष्पाद	२४.४६	मकर		६.४३	५.४०
					सिद्धि	३०.४०						

जनाबाई की चक्की पीस रहे भगवान

भक्तिमती जनाबाई की कहानी

भक्तिमती जनाबाई सुख्यिात भक्तश्रेष्ठ श्रीनामदेवजी के घर में नौकरानी थी। घर में झाड़ू देना, बर्तन मांजना, कपड़े धोना और जल भरना आदि काम वह करती थी। भक्तवर नामदेव जी के घर में होने वाली सत्संगति तथा भगवत चर्चा के प्रभाव से जनाबाई के सरल हृदय में भी भक्ति का बीज अंकुरित हो गया। इसी तरह जनाबाई भी भगवान को निरंतर स्मरण करने लगी।

एकादशी का दिन है, नामदेव जी के घर भक्तों की मंडली एकत्र हुई है, रात के समय जागरण हो रहा है। नामकीर्तन और भजन में सभी मस्त हो रहे हैं। जनाबाई भी एक कोने में खड़ी प्रेम में मत होकर झूम रही है। सुबह हुई, लोग अपने-अपने घर गये। जनाबाई भी अपने घर आयी। घर आने पर जनाबाई जरा लेट गई। प्रेम की मादकता अभी पूरी नहीं उतरी थी, वह उसी में मुग्ध हुई पड़ी रही। सूर्यदेव उदय हो गये। जनाबाई उठी और सूर्योदय हुआ देखकर बहुत घबरायी। उसने सोचा, मुझे बड़ी देर हो गयी।

मालिक के घर झाड़ू-बर्तन की बड़ी कठिनाई हुई होगी। वह तेजी में मालिक के घर की ओर मुड़ी, और वहां कुछ काम निपटाकर वह जल्दी-जल्दी कपड़े लेकर उन्हें धोने के लिए चंद्रभागा नदी के किनारे पहुंची। कपड़े धोने लगी तो उसे कोई जरूरी काम याद आया कि यदि यह काम पूरा नहीं हुआ तो मालिक को बहुत कष्ट पहुंचेगा। जैसे ही वह कपड़े धोए बिना मालिक के घर की ओर जाने लगी, वैसे ही जनाबाई को एक वृद्ध महिला उसे मिली और वृद्धा ने कहा, तुम घर जाओ, मैं तुम्हारे कपड़े धो देती हूं। जना ने हिचकते हुए हां कर दी। वहीं वृद्धा ने इधर कपड़ों को हाथ लगाया, और कपड़े धुल गए। जना ने लौटकर देखा, लेकिन वह वृद्धा का पता कहीं नहीं लगा। जना ने नामदेव जी को हाल सुनाया। गला भर गया। नामदेवजी बोले, जना तू बड़भागिनी है। भगवान ने तुझ पर बड़ा अनुग्रह किया। वह कोई मामूली बुढ़िया नहीं थी, वे तो साक्षात नारायण थे, जो तेरे प्रेमवश बिना ही बुलाये तेरे काम में हाथ बंटाने आये थे। यह सुनते ही जनाबाई प्रेम से रोने लगी। बताते हैं कि जनाबाई की चक्की भी भगवान पीस देते थे। ऐसी है भक्त जनाबाई की गाथा।

लीजिए, अलसी से लाभ

पुराने समय से हम सभी अलसी के बीज के फायदे के बारे में जानते हैं, लेकिन शायद आज हम इसे इस्तेमाल करना ही भूल गए हैं। ऐसे में हम आपको इस सुपरफूड के बारे में बताने वाले हैं जिसे आप अपने जीवन का हिस्सा बनाकर कई फायदे प्राप्त कर सकते हैं।

मूत्र जलन - 5 ग्राम अलसी के बीजों को पूरी रात गर्म पानी में भिगोकर रखें। अगले दिन सुबह जब यह पूरे पानी को सोख ले तो इसे सही से छान लें। रोजाना भोजन से पूर्व इसका सेवन करें। मूत्र की जलन से संबंधित रोगों के उपचार के लिए यह बहुत उपयोगी है।

वसा असंतुलन- प्रात: 2-3 मि. ली. अलसी के तेल को एक कप गर्म पानी में मिलाकर खाली पेट लें। यह केलोस्ट्रोल तथा मोटापा कम करने में सहायक सिद्ध होता है।

गले का दर्द- अलसी के 2-3 ताजा फूलों को महीन बारीक लेप बनाकर उसे गले के चारों ओर लगा लें, गले का दर्द दूर होता है।

स्किन पर लाता है नई चमक- स्किन को खूबसूरत और ग्लोइंग बनाने के लिए हम कई तरह के नुस्खे अपनाते हैं लेकिन, बिना सही पोषण के स्किन हेल्दी नहीं रह सकती है। ऐसे में आप इस सुपरफूड का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह चेहरे पर खोए हुए ग्लो को वापस लेकर आता है। इसके साथ ही महंगी क्रीमों पर होने वाले खर्च से भी आपको बचाता है।

गठिया- एक मुट्ठी अलसी के बीजों को सारी रात छाछ में भिगोकर रखें। अखिलेश का बारीक पेस्ट बना लें। इस लेप को जोड़ों पर लगा लें। इससे एक-दो सप्ताह में जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है।

(कर्मचारी राज्य बीमा निगम के आयुष प्रभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तक *सरल आयुर्वेद औषधीय चिकित्सा से साभार)*

.....

आयुर्वेद में अलसी को मंदगंधयुक्त, मधुर, बलकारक, किंचित कफवात-कारक, पित्तनाशक, स्निग्ध, पचने में भारी, गरम, पौष्टिक, कामोद्दीपक, पीठ के दर्द ओर सूजन को मिटानेवाली कहा गया है। युनानी में वैद्य अंतर्गत जखमों पर बीजों का सेवन करने के लिए कहा जाता है।

आदर्श मकान कैसा हो

आचार्य ऋषि सिंह

वास्तु बताता है कि एक आदर्श मकान कैसा होना चाहिए। इसके अनुसार का मेन गेट सिर्फ पूर्व या उत्तर दिशा में ही होना श्रेयस्कर है। वास्तु के अनुसार घर के कमरे, हॉल, किचन, बाथरुम और बेडरूम एक खास दिशा में होंगे तो घर में वास्तुदोष नहीं होगा और लोग सुखी रहेंगे।

पूर्व दिशा – वास्तु कहता है कि पूर्व दिशा सूर्योदय की होने से, यहां से सकारात्मक व ऊर्जावान किरणें हमारे घर में प्रवेश करती हैं। यदि हम घर का मेन गेट इस दिशा में रखेंगे तो अच्छा रहेगा।

पश्चिम दिशा – आपके रसोईघर या टॉयलेट इस दिशा में होने चाहिए। लेकिन रसोईघर और टॉयलेट पास-पास न हों।

उत्तर दिशा –घर के अधिकांश खिड़की और दरवाजे इसी दिशा में होने चाहिए। घर की बालकॉनी व वॉश बेसिन भी इसी दिशा में होना अच्छा रहता है।

दक्षिण दिशा – इस ओर खुलापन, शौचालय आदि नहीं रखें। बल्कि इस स्थान पर भारी सामान रखें। यदि इस दिशा में द्वार या खिड़की है तो घर में नकारात्मक ऊर्जा रहेगी और ऑक्सीजन का लेवल भी कम रहेगा जिससे घर में क्लेश की संभावना बनी रहेगी।

उत्तर-पूर्व दिशा – इसे ईशान दिशा कहा जाता है। यह दिशा जल की दिशा है। यहां पर बोरिंग, स्वीमिंग पूल, पूजास्थल आदि बनाए जाने चाहिए। इस दिशा में मेनगेट बहुत अच्छा रहता है।

उत्तर-पश्चिम दिशा – यह वायव्य दिशा है। इस दिशा में बेडरूम, गैरेज, गौशाला आदि होना चाहिए।

दक्षिण-पूर्व दिशा – इसे घर का आग्नेय कोण कहते हैं। यह अग्नि तत्व की दिशा है। इस दिशा में गैस, बॉयलर, ट्रांसफॉर्मर आदि होना चाहिए।

दक्षिण-पश्चिम दिशा – इसे नैऋत्य दिशा कहते हैं। इसमें खुलापन अर्थात खिड़की, दरवाजे बिलकुल ही नहीं होना चाहिए। घर के मुखिया का कमरा यहां बना सकते हैं। कैश काउंटर, मशीनें आदि आप इस दिशा में रख सकते हैं।

घर का आंगन – आंगन में तुलसी, अनार, जामफल, मीठा या कड़वा नीम, आंवला आदि के अलावा सकारात्मक ऊर्जा देने वाले फूलदार पौधे लगाएं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि वो पूर्ण ब्रह्म ही हैं

डा. जीवन गोयल,
गुरु हरिकिशन हॉस्पिटल, नई दिल्ली

इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे पूर्ण ब्रह्म हैं। मैं जो भी कुछ हूं उनकी वजह से हूं। मेरा वजूद मेरी हैसियत उन्हीं की कृपा का प्रसाद है।

मैं तब की बात लिख रहा हूं जब मुझे यह भी पता नहीं था कि गुरु कहते किसे हैं। एक संत ने ही बताया कि गुरु तो तीनों लोकों में व्याप्त है, तीनों काल के बारे में जानता है और ब्रह्मा, विष्णु, महेश व महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती व सब देवता उनके आगे सर्वथा सर झुकाए रहते हैं।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

सन 1996–97 की बात है मेरा बेटा अर्जुन 14–15 वर्ष का था। वह अस्थमा का मरीज हो गया। मैंने डाक्टर होने के नाते दवाई दी। उसका रिएक्शन हो गया। अब वह न खा सकता था और न ही कुछ पी सकता था। उसे सांस भी नहीं आ पा

रहा था। दवाई के रिएक्शन के कारण सारे शरीर पर फफोले से पड़ गए थे। हम सोच ही रहे थे कि क्या करें, कौन से अस्पताल जाएं। रात के 8–9 बज रहे थे। इतने में एक गुरु भाई आए और बोले गुरुजी के पास चलो। वो हमें गुरुजी के पास ले गए। गुरुजी जैसे हमारा ही इंतजार कर रहे थे। देखते ही हंसने लगे, बोले पहले ही आना था। कोई बात नहीं तुम्हारा पिता डाक्टर है, लेकिन अब हमारा डाक्टर इलाज करेगा। जाओ ठीक हो जाएगा।

हम वापस आ गए। गुरुजी की अपार कृपा से लड़का सुबह तक 90 प्रतिशत ठीक हो गया। खाने पीने लगा। फिर सुबह गुरुजी से मिले। कहने लगे सब ठीक हो जाएगा। सचमुच वह बिल्कुल ठीक हो गया। कोई दवाई नहीं दी और गुरु जी की कृपा से बिल्कुल ठीक है।

एक बार मैं अपने स्कूटर से निजामुद्दीन स्टेशन से तुगलकाबाद गांव जा रहा था। स्कूटर में कट कट की आवाजें आने लगीं। मन ही मन मैंने प्रार्थना की कि गुरुजी रात का समय है। कोई मिस्त्री भी नहीं मिलेगा। घर पहुंचना है, रास्ता भी बड़ा खराब था। गुरुजी ने घर पहुंचा दिया। सुबह मिस्त्री को बुलाकर लाया। उसने बताया कि पिछले पहिए के चारों बोल्ट निकल गए थे। मैं अपने बाबा की कृपा के कारण ही सही सलामत घर पहुंच सका था।

मेरी लड़की की कमर में दर्द रहता

श्री गुरू महाराज के दर्शन लाभ कैसे लें...

मंगलवार, शनिवार, रविवार
दोपहर 12 बजे एवं शाम 8 बजे – सतसंग भवन

वीरवार
शाम 8 बजे

समाधि स्थल पर

श्री सुदर्शन वचनामृतम : चिन्तन खण्ड से

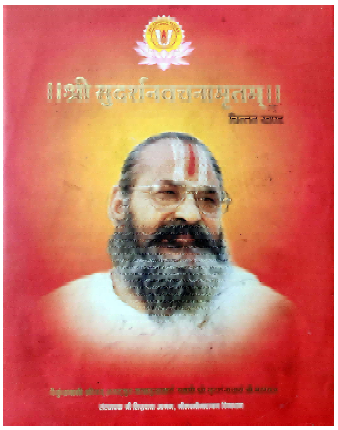

चाह गई चिंता मिटी मनवा बेपरवाह
जिनको कछु न चाहिए वो शाहों के शाह

चरैवैति चरैवैति..

1. साधक को सर्व प्रथम अहंकार का त्याग करना चाहिए। जब अहंकार और ममत्व का त्याग कर देगा तब ईश्वर का अनुभव कर सकेगा। चिंतन खंड पृष्ठ संख्या 73

◀ II ▶

2. भागवान की शरणागति आने पर ईश्वर जीव मात्र को सब चिन्ताओं से मुक्त कर देता है। चिंतन खंड पृष्ठ संख्या 74

◀ II ▶

3. ईश्वर की शरणागति में आना ही सम्पूर्ण साधना का सार है। चिंतन खंड पृष्ठ संख्या 74

◀ II ▶

4. अश्तित्व को खो देना ही परम ब्रह्म की प्राप्ति है। उसी का नाम मोक्ष है, उसी का नाम शरणागति है। चिंतन खंड पृष्ठ संख्या 74

◀ II ▶

5. जिसका मन और इन्द्रियां संयमित नहीं हैं। वह कभी परमात्मा की सन्निधि को प्राप्त नहीं होता है। चिंतन खंड पृष्ठ संख्या 74

◀ II ▶

क्रमशः जारी अगले अंक म

(ऐसे ही वृहद् ज्ञान के लिए आप वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की वाणी का संग्रह श्री सुदर्शन वचनामृत चिन्तन खण्ड को श्री सिद्धदाता आश्रम से प्राप्त कर सकते हैं।)

श्री सुदर्शन वचनामृतम : साधना खण्ड से

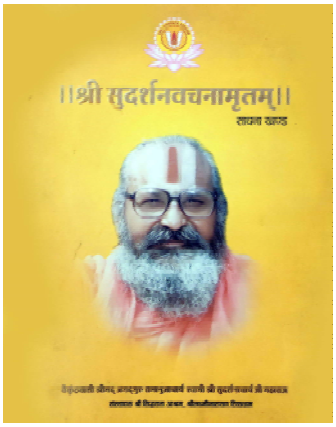

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद

ध्यायेन्..

1 . जब कोई भक्त भागवान की भक्ति में तल्लीन हो जाता है। तो भागवान भी ऐसे भक्त को अपने से ही महान मान लेते हैं। साधना खंड पृष्ठसंख्या - 172

◀ II ▶

2 . भगवान ने हमको बहुत कुछ दिया है, यदि उसका कुछ अंश दूसरों को दे दिया जाये तो परहित होगा। साधना खंड पृष्ठ संख्या - 174

◀ II ▶

3 . कर्म नाशा नदी को पार करने वाला वही व्यक्ति हो सकता है। जो अपने हाथों से कुछ अंश दूसरों के लिए दे। साधना खंड पृष्ठ संख्या - 175

◀ II ▶

4 . यदि मानव प्रत्येक दिन थोड़ा सा समय निकाल कर ईश्वर का भजन कर ले तो वह यमलोक की यातनाओं से बच सकता है। साधना खंड पृष्ठ संख्या - 176

◀ II ▶

5. ईश्वर से मिलने के लिए साधन चाहिए और वह साधन गुरु होता है। गुरु के बिना ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं। साधना खंड पृष्ठ संख्या - 190

◀ II ▶

क्रमशः जारी अगले अंक में

(ऐसे ही वृहद् ज्ञान के लिए आप वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की वाणी का संग्रह श्री सुदर्शन वचनामृत साधना खण्ड को श्री सिद्धदाता आश्रम से प्राप्त कर सकते हैं।)

श्री गुरूजी उवाचः

प्यार करने वाला मूल्य नहीं चाहता

वैकुंठवासी स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक – श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

गत अंक से जारी

अगर वह योग्य है, बलिष्ठ है, समदर्शी है और हर प्रकार से शक्तिशाली है, तो वह स्वयं तुम्हारे प्यार की कीमत को कभी गलत नहीं होने देगा। प्यार का मूल्य चुकायेगा। क्या भगवान् कृष्ण ने प्यार का मूल्य गोपिकाओं को नहीं चुकाया? केवल उन्हें आनन्दित ही नहीं रखा बल्कि उनको अपना दिव्य लोक भी दिया।

उस परमात्मा से प्यार किया हुआ कभी व्यर्थ नहीं जाता। पर हम तो शीशे के बदले कोहेनूर हीरे को गंवा देते हैं। जैसे एक बच्चे के हाथ में कोहेनूर हीरा हो, कम चमकने वाला हो। वह कम ही चमकता है। और एक शीशे का बनाया हुआ हीरा बड़ी चमक मारता है, उस चमक के आधार पर हम उस असली हीरे को दे कर के कांच ले लेते हैं। मेरे कहने का भाव है कि जो सांसारिक, सामाजिक सुख है, विलासता है, यह शीशा है। ओस की बूंद है, ओस की बूंद को देख कर, हम घड़े को फोड़ देते हैं। घट क्या है? शरीर। और इसके अन्दर जल क्या है? उस परमात्मा का प्यार रूपी जल भरा हुआ है, तरंगें ले रहा है, लहरें ले रहा है, शान्ति ले रहा है। पर हम उस शान्ति के लिए, उस लहर के लिये काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ के द्वारा उस घड़े को

फोड़ देते हैं। आप प्रातः काल बाग बगीचे में जाते हैं तो वहां ओस की कितनी सुन्दर बूंदें होती हैं जो हरी, पीली, अनेकानेक भान्ति के रंगों में परिणीत होती रहती हैं। बहुत खूबसूरत होती हैं। उस खूबसूरती को देखकर पुराना घड़ा फोड़ दिया हमने तो, और उन बूंदों के पीछे गये हम तो जो सूर्य उदय होने के बाद विलीन हो जाती हैं, एक भी नहीं रहती। सूर्य उदय का मतलब है कि शरीर में ज्ञानरूपी सूर्य का उदय करके देखें, कि क्या ये टिकाऊ हैं? अगर ये टिकाऊ नहीं हैं तो हम उस परमात्मा से प्यार करें जो टिकाऊ है और वह खुद हमको दे देगा। क्या अपने बेटे–बेटी को मां–बाप दुःख देते हैं? अरे, वह चोरी करके भी, भीख मांग कर के भी, पड़ौसी से झूठ बोलकर के भी, अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं। उनकी आवश्यकता की वस्तु लाते हैं। साधारण बात है। क्या परमपिता परमात्मा हमको दुःख देगा?

प्यार की परिभाषा के लिये महात्मा बुद्ध अपने शिष्य से कहने लगे कि हे बेटे! जहां पर काम, क्रोध, लोभ, मोह, मात्सर्य आदि–आदि हैं, जहां कामनायें होती हैं, छिद्र होते हैं, उन छिद्रों के कारण पानी से तृप्ति नहीं होती अर्थात् इन छिद्रों को बन्द करना ही पड़ेगा।

प्यार करने वाला उसका मूल्य नहीं चाहता। प्यार करने वाला कभी दिखावा नहीं करता। प्यार करने वाला कभी सम्मान की इच्छा नहीं करता। प्यार करने वाला कभी पुजवाने की इच्छा नहीं करता। वह इच्छा रहित होता है। वह एक तरफा प्यार करता है। एक भक्त भगवान् से कहता है, ''मैं तुझे चाहूं तो चाहूं,

प्यार करने वाला उसका मूल्य नहीं चाहता। प्यार करने वाला कभी दिखावा नहीं करता। प्यार करने वाला कभी सम्मान की इच्छा नहीं करता। प्यार करने वाला कभी पुजवाने की इच्छा नहीं करता। वह इच्छा रहित होता है। वह एक तरफा प्यार करता है।

पर तू मुझे चाहना नहीं।'' भगवान् बोले कि बेवकूफ, इतने दिन भजन करके क्या तू यही मांग रहा है? भक्त बोला, मैं बेवकूफ ही ठीक हूं, यही मांगूंगा। बोले, क्यूं? क्योंकि तेरे प्यार के सरूर का गरूर हो जायेगा मुझे। तेरे प्यार का जब सरूर चढ़ेगा मुझे, तो मुझे गरूर हो जायेगा कि मैं भक्त हूं, मैं आचार्य हूं, मैं जगद्गुरू हूं, मैं जगद्गुरू रामानुजाचार्य हूं, मैं स्वर्ण के सिंहासन पर बैठा हूं, मैं प्रवचन कर रहा हूं, मैं मांगू तो मांगू, पर तू मुझे देना नहीं। मुझे मांगने की आदत है। मैं मांगूंगा पर तू मुझे मना कर देना। क्यों? इसलिए कि लोग मुझे तेरे दर का भिखारी कहने लगेंगे। मुझे प्यारा नहीं कहेंगे, मुझे प्यार करने वाला नहीं कहेंगे। अगर मैंने प्यार की कीमत ले ली तो मेरा किस बात का प्यार है?

क्रमशः जारी

!! पुंसवन संस्कार !!

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ताकि सुंदर और गुणवान हो संतान

श्री सुदर्शन संदेश

हिंदू धर्म ग्रंथों में मनुष्य के 16 संस्कार निर्धारित किए गए हैं। पुंसवन संस्कार इस सूची में दूसरे स्थान पर है। कुछ विद्वानों का कहना है कि पुंसवन संस्कार करने के दो प्रमुख उद्देश्य होते हैं, पहला पुत्र की प्राप्ति और दूसरा स्वस्थ सुंदर तथा गुणवान संतान।

स्मृति संग्रह में क्या लिखा है

स्मृति संग्रह में पुंसवन संस्कार के संदर्भ में निर्देश प्राप्त होते हैं। स्मृति संग्रह के अनुसार गर्भ से पुत्र की प्राप्ति हो इसलिए पुंसवन संस्कार किया जाता है। यह संस्कार गर्भधारण के तीसरे माह में किया जाता है। मेडिकल साइंस के अनुसार यह वही समय है जब एक भ्रूण आकार धारण करते हुए शिशु का रूप लेता है। संस्कार के दौरान गर्भवती माता को कुछ विशेष प्रकार के श्लोक सुनाए जाते हैं।

पुत्र से तात्पर्य पुरुष या कुछ और

ज्योतिष विशेषज्ञ एवं हिंदू धर्म ग्रंथों की आधुनिक युग में नवीन व्याख्या का प्रयास कर रहे आचार्य आनंद बताते हैं कि दरअसल ज्यादातर विद्वानों ने पुत्र प्राप्ति वाले श्लोक के बाद आगे अध्ययन करने का कष्ट नहीं किया या फिर अधिक दक्षिणा के लालच में इसे छुपा लिया गया। हिंदू धर्म शास्त्रों में पुत्र से तात्पर्य स्पष्ट रूप से बताया गया है। पुम् नामक नरक से जो रक्षा करता है, उसे पुत्र कहते हैं। (यानी पुत्र से तात्पर्य पुरुष संतान से नहीं है बल्कि एक ऐसी संतान जो गुणवान हो, संवेदनशील हो, शक्तिशाली हो, सकारात्मक विचार से युक्त हो) ऐसी संतान की प्राप्ति के लिए पुंसवन संस्कार की विधि स्थापित की गई है।

पुंसवन संस्कार में क्या होता है

मेडिकल साइंस के अनुसार गर्व के तीसरे महीने में भ्रूण आकार लेने लगता है। हिंदू धर्म ग्रंथों के अनुसार इसी के साथ गर्भ में जीवित शिशु ज्ञान ग्रहण करने लगता है। पुंसवन संस्कार के माध्यम से गर्भवती माता को सकारात्मक विचार के साथ, सात्विक भोजन एवं परिवार की परंपरा के अनुसार संस्कारों का प्रत्यारोपण किया जाता है। जब गर्भवती महिला इन्हें धारण करती है तो उनके गर्भ में पल रही संतान को भी इसी के अंश प्राप्त होते हैं। परिणाम स्वरूप एक योग्य संतान की उत्पत्ति होती है और योग्य संतान ही माता-पिता को वृद्धावस्था में नरक के समान कष्ट भोगने से बचा सकती है।

संक्रांति का महत्व

संक्रांति (14 जनवरी 2022) पर विशेष

'पर्व एक नाम अनेक' इसी कथन को सिद्ध करता है मकर संक्रांति का पर्व. मकर संक्रांति हमारे देश का एक महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध त्यौहार है. मकर संक्रांति श्रद्धा, आस्था और विश्वास का त्यौहार है. पौष मास में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तब इस पर्व को मनाया जाता है. यह त्यौहार जनवरी माह के तेरहवें, चौदहवें या पन्द्रहवें दिन (जब सूर्य धनु राशि को छोड़ मकर राशि में प्रवेश करता है) पड़ता है. मकर संक्रांति के दिन से सूर्य की उत्तरायण गति प्रारम्भ होती है. इसलिये इसको उत्तरायणी भी कहते हैं.

संक्रांति पूरे भारत में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है. मकर संक्रांति पर्व का खगोलीय महत्व भी है. इस पर्व के पीछे एक वैज्ञानिक कहानी भी है. पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है. भारत उत्तरी गोलार्द्ध का एक हिस्सा है अत: जब सूर्य इससे दूर हो जाता है तो रातें बड़ी हो जाती हैं और दिन छोटा हो जाता है. सूर्य के दक्षिणायन होने पर शास्त्रों के अनुसार यह समय मांगलिक कार्यों के लिए शुभ नहीं होता है और सूर्य की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए श्री कृष्ण कहते हैं जो व्यक्ति उत्तरायण में शरीर का त्याग करता है वह मेरे लोक में निवास करता है, क्योंकि यह देवताओं का दिन होता है, दक्षिणायन में शरीर त्याग करने वाले को पुन: देह धारण करना पड़ता है क्योकि इस समय देवताओं की रात्रि होती है. इस वजह से मकर संक्रान्ति का बहुत महत्व है. मकर संक्रांति के दिन सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश करता है. सामान्यत: भारतीय पंचांग की समस्त तिथियां चंद्रमा की गति को आधार मानकर निर्धारित की जाती हैं, किंतु मकर संक्रांति को सूर्य की गति से निर्धारित किया जाता है. इसी कारण यह पर्व प्रतिवर्ष 14 जनवरी को ही पड़ता है. इस दिन जप, तप, दान, स्नान, श्राद्ध, तर्पण आदि धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष महत्व है. धारणा है कि इस अवसर पर दिया गया दान सौ गुना बढ़कर पुन: प्राप्त होता है. इस दिन शुद्ध घी एवं कंबल दान मोक्ष की प्राप्ति करवाता है. मकर संक्रांति के अवसर पर गंगास्नान एवं गंगातट पर दान को अत्यंत शुभकारक माना गया है.

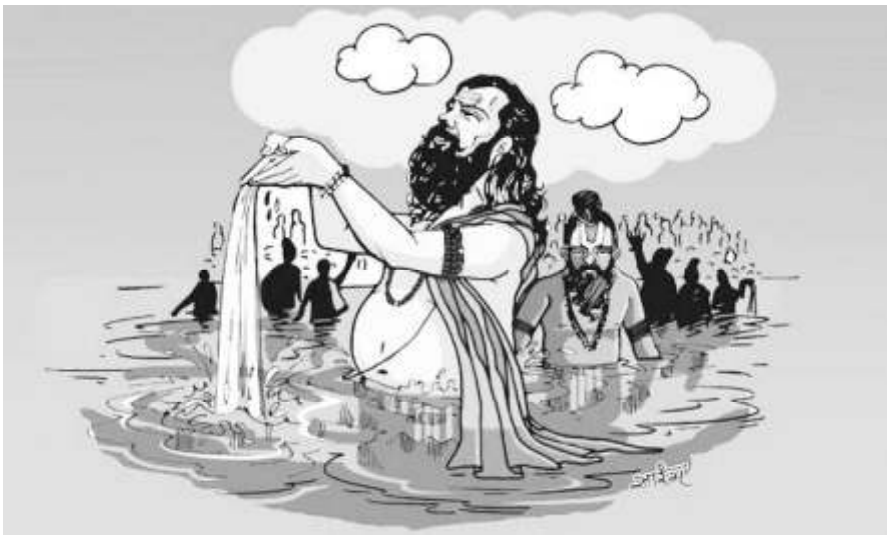

प्रकृति में रमने का महीना माघ

माघ मेला (17 जनवरी 2022 से) पर विशेष

प्रकृति में रमने और बसने का महीना है माघ। पूरे माघ में किया गया तप बाकी बचे ग्यारह महीनों में गजब की सकारात्मकता प्रदान करता है, देवत्व दिलाता है। तभी तो माघ माह को सर्वाधिक महत्व देते हुए महान संत कवि तुलसीदास ने रामचरित मानस के बालखंड में लिखा है- 'माघ मकर गति रवि जब होई, तीरथपतिहि आव सब कोई।'

प्रयागराज में दन दिनों माघ मेला की तैयारी चल रही है। साधना, समर्पण व संस्कार का संवाहक माघ मेला जनवरी 2022 में लगेगा। मोक्ष की कामना, मनोवांछित फल की प्राप्ति की संकल्पना साकार करने के लिए हजारों संत व श्रद्धालु सुख-सुविधाओं का त्याग करके संगम की रेती पर धूनी रमाएंगे। माघ मास में कल्पवास करके भजन-पूजन में लीन रहेंगे। कल्पवास अबकी 30 दिनों तक चलेगा। माघ मेला में कल्पवास का आरंभ 17 जनवरी पौष पूर्णिमा स्नान पर्व से होगा, जबकि समापन 16 फरवरी माघ पूर्णिमा स्नान पर्व पर होगा।

तीर्थराज प्रयाग में संगम तट पर एक महीने कल्पवास करने की परंपरा है। इसके लिए दो कालखंड तय है। कुछ कल्पवासी मकर संक्रांति से माघ शुक्ल पक्ष की संक्रांति तक कल्पवास करते हैं, परंतु पौष पूर्णिमा से माघ पूर्णिमा तक कल्पवास करने वाले श्रद्धालुओं की संख्या अधिक होती है।

माघ मास 2022 का प्रमुख स्नान पर्व

-14/15 जनवरी - मकर संक्रांति
-17 जनवरी - पौष पूर्णिमा
-एक फरवरी - मौनी अमावस्या
-पांच फरवरी - वसंत पंचमी
-आठ फरवरी - अचला सप्तमी
-16 फरवरी - माघी पूर्णिमा
-एक मार्च - महाशिवरात्रि।

ऐसा माना जाता है कि पंचतत्वों से बनी इस मानव देह को माघ में तप द्वारा ही पूर्ण किया जा सकता है। संसार में रहते हुए जब पंच तत्वों- 'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा। पंच रचित अति अधम शरीरा॥' पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु इन पांच तत्वों से यह शरीर बना है। असल में तप के द्वारा हम पंच तत्वों में किसी भी तरह से आ गई कमी को पूरा करने में सक्षम हो जाते हैं। जितना तप हम करते हैं, उतना ही हममें देवत्व बढ़ता है।

बहुत से लोग नहाते समय 'गंगे यमुने चैव गोदावरि सरस्वती। कावेरी नर्मदे सिन्धोर्जलअस्मिन्सन्निधिं कुरु॥' जरूर कहते होंगे। तीर्थराज प्रयाग में इनमें से तीन गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है। हम सबके शरीर में 70 प्रतिशत पानी है, इसलिए माघ माह में किसी भी पवित्र नदी के पास अधिक से अधिक समय बिताना, नहाना, तप करना बहुत जरूरी है।

फिर ब्रह्मा, विष्णु, महादेव आदित्य, मरुद्गण तथा अन्य सभी देवी-देवता इसी माघ मास में संगम स्नान करते हैं। ऐसा माना जाता है कि प्रयाग में माघ मास में तीन बार स्नान करने से जो फल मिलता है, वह पृथ्वी पर दस हजार अश्वमेध यज्ञ करने से भी प्राप्त नहीं होता।

माघ स्नान से मनुष्य के शरीर में स्थित पाप जल कर भस्म हो जाते हैं। स्नान का सबसे उत्तम समय तभी माना जाता है, जब आकाश में तारागण दिखाई दे रहे हों यानी सूर्योदय से पूर्व।

नामदान (दीक्षा)

दीक्षा के संबंध में गुरूगीता में लिखा है-

गुरूमंत्रो मुखे यस्य तस्य सिद्धयन्ति नान्यथा।
दीक्षया सर्वकर्माणि सिद्धयन्ति गुरूपुत्रके।।

- गुरूगीता 2/131

अर्थात् जिसके मुख में गुरूमंत्र है, उसके सब कर्म सिद्ध होते हैं, दूसरे के नहीं। दीक्षा के कारण शिष्य के सर्वकार्य सिद्ध हो जाते है।

श्री सिद्धदाता आश्रम श्री रामानुज परंपरा में विश्वास रखता है। आश्रम भाष्यकार रामानुज द्वारा भाषित विशिष्टाद्वैत मत के अनुसार ही आयोजन करता है। इस संपद्राय को श्री आचार्य संप्रदाय भी कहा जाता है। इससे भी इस संप्रदाय में दीक्षा का विशेष महत्व हो जाता है। हमारे परमपूज्य श्री गुरू महाराज अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज धर्म मार्ग में जुड़ने वालों को दीक्षा प्रदान करते हैं। लेकिन इसके लिए कुछ नियमों का पालन करना भी बहुत आवश्यक है।

गुरू की कृपा और शिष्य की श्रद्धा रूपी दो पवित्र धाराओं के संगम को ही दीक्षा माना गया है। यानी गुरू के आत्मदान और शिष्य के आत्मसमर्पण के मेल से ही दीक्षा संपन्न होती है। गुरूदीक्षा एक सूक्ष्म आध्यात्मिक प्रयोग है। दीक्षा में शिष्यरूपी सामान्य पौधे पर गुरूरूपी श्रेष्ठ पौधे की कलम (टहनी) प्राणानुदान के रूप में स्थापित कर शिष्य को अनुपम लाभ पहुंचाया जाता है। वहीं गुरू की सेवा के लिए शिष्य को अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरूषार्थ एवं धन का अंश उनके सान्निध्य में रहने हेतु लगाना आवश्यक होता है। इसमें शिष्य अपनी श्रद्धा और संकल्प के सहारे गुरू के समर्थ व्यक्तित्व के साथ जुड़ता है। समय समय पर दीक्षा की तिथियों की घोषणा की जाती है। जिनके अनुसार भक्त दीक्षा प्राप्त करते हैं।

श्री रामानुज संप्रदाय– आध्यात्मिक पृष्ठभूमि

श्री रामानुज चरित पुस्तक से साभार

श्री संप्रदाय के वैष्णव जब रामानुज आदि पूर्व के गुरुओं का नाम कीर्तन करते हैं, तो उस पवित्र नामावली के प्रभाव से वे लोग अपने को सर्व कल्मष रहित देवता के समान पवित्र बोध करने लगते हैं। विश्वासी वैष्णव हृदय चाहे जितने भी तमसाच्छन्न क्यों न हों, दुख दुर्दिन दुर्दशा से तरंगायित संसार समुद्र में चाहे जितने भी उद्विग्न तथा भयभीत क्यों न हों, ज्योंही वे इस पवित्र नामावली का स्मरण करते हैं, त्योंही उनके सकल सन्ताप दूर हो जाते हैं। इसका कारण क्या है? श्री रामकृष्ण ने इस प्रश्न की समुचित मीमांसा की है। कोई कमरा चाहे हजारों वर्षों से ही अन्धकाराच्छन्न क्यों न हो, दियासलाई की एक तीली घिसते ही आलोकित हो उठता है, उसमें घनीभूत तमोराशि तत्काल ही विनष्ट हो जाती है। इसी प्रकार किसी अग्नितुल्य पवित्र तथा उज्ज्वल महापुरुष का नाम एक बार भी उच्चरि करने से हृदय की समस्त ग्लानि तुरन्त भस्मसात हो जाती है। यदि महापुरुषों के नाम का इतना प्रभाव है, तो उनके स्व-स्वरूप का प्रभाव जो अनिर्वचनीय तथा अकल्पनीय होगा, इसे समझने के लिए क्या किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता है?

परन्तु जैसे माचिस की तीली को उल्टी दिशा में घिसने से अन्धकार दूर नहीं हो सकता, सैकड़ों वर्षों तक घिसते रहने पर भी जैसे उसका कोई फल नहीं निकलेगा, वैसे ही महापुरुषों के नाम स्मरण का भी नियम है, जिसे जाने बिना उससे कोई फल होने की सम्भावना नहीं, बल्कि अंतत: वह नास्तिकता का ही आनयन करता है। वह नियम क्या है?

भक्तावतार श्री चैतन्य महाप्रभु ने उसे इन शब्दों में विधिबद्ध किया है-

तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीय: सदा हरि:।।

– जो अपने को तृण से भी छोटा मानते हैं, जो वृक्ष के समान सहनशील हैं, स्वयं मान के अनिच्छुक होकर भी दूसरों को मान देते हैं, वे ही हरिनाम लेने के उपयुक्त हैं।

भागवत, भक्त तथा भगवान – ये तीनों एक ही हैं। अत: हरिनाम ग्रहण के लिए जो नियम आवश्यक हैं, हरिभक्त महापुरुषों का नाम लेने के लिए भी उन्हीं नियमों का प्रयोजन होता है। भक्त और भगवान में भेद नहीं है। इसलिए कि सच्चे भक्त का हृदय सर्वदा ही हरि का निवास स्थान है, भक्त उनका आज्ञाकारी दास है। दास के समस्त शारीरिक तथा मानसिक प्रयास प्रभु के ही प्रयास का नामन्तर मात्र है। दास अपने लिए न कुछ करता है, न कुछ सोचता है। उसके समस्त कार्य तथा विचार उसके अपने लिए नहीं, बल्कि प्रभु के हैं। जैसे कि हाथ पांव मेरे आज्ञाकारी होने के कारण हाथ पांव द्वारा अनुष्ठित सकल कार्य हाथ पांव के नहीं बल्कि मेरे ही माने जाते हैं, वैसे ही भृत्य के कार्य तथा विचार भृत्य के नहीं बल्कि प्रभु के ही मानना उचित है। अत: भक्त और भगवान में भेद कहां है।

भागवत पाठ से भगवत्तत्व की उपलब्धि होती है। सारे भागवत भी भगवान के ही महिमा कीर्तन में लगे रहते हैं। इसीलिए भगवान व्यास ने ब्रह्मसूत्र में शास्त्रयोनित्वात्-(ब्रह्मसूत्र 1.1.3) इस सूत्र के द्वारा प्रतिपादित किया है कि ब्रह्म केवल शास्त्र के द्वारा ही व्यक्त एवं ज्ञात होते हैं। भगवन्मय होने के कारण भागवत भी भगवान का नामान्तरण मात्र है।

जब मानव हृदय अन्धकार से आच्छन्न रहता है, जब सभी विषयों को जानने की इच्छा चित्त पर अधिकार जमाकर उसे चंचल कर डालती है, जब उसी चंचल बुद्धि की सहायता से कुछ इन्द्रिय सुखों की प्राप्ति के सहज उपाय का आश्रय लेकर मनुष्य अपने को कृतार्थ एवं सर्वज्ञ मानने लगता है, जब वह भौतिक सुखों के जनक आधुनिक विज्ञान तथा दर्शनशास्त्र का पाठ करके अपने को मानव समाज का नेता और गुरु मानने लगता है, जब अपरा विद्या की माया से मुग्ध होकर उसकी समस्त ज्ञानपिपासा ऐहिक सुखों के सन्धान में ही लग जाती है, जब यह लघुचित्त मानव विद्याभिमान से अहंकारी होकर अपने को गुरुत्व एवं गाम्भीर्य का आदर्श स्वरूप मानने लगता है, तब कहां तो उसका अहंकार मलिन, गर्वस्फीत, दुर्विनीत हृदय और कहां धीर-नम्र, निर्मल तथा प्रशान्त हृदय ग्राह्य भक्तनाम कीर्तन? वह व्यक्ति सोचता है– कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया – (गीता 16.15) मेरे समान और कौन है या मुझसे बड़ा और कौन है।

उसके लिए तृण की अपेक्षा लघु होना तथा वृक्ष के समान सहनशील होना किसी भी प्रकार से सम्भव नहीं है। वह व्यक्ति स्वयं ही मान सम्मान के लिए लालायित होता है, यश की पिपासा से उसका कण्ठ सूख रहा होता है। ऐसा मनुष्य भला किस प्रकार दूसरों को मान देगा, या फिर किस प्रकार दूसरों का यश-कीर्तन करेगा?

मनुष्य जब भोग लिप्सा के हाथ से मुक्त हो जाते हैं, जब भौतिक सुख उनके चित्त को आकृष्ट करने में असमर्थ हो जाते हैं, अत: जब संसार से परे, वाक्य-मन से अतीत पारमार्थिक सुख की आकांक्षा

.... अगले अंक में जारी

रामानुज जन्म

श्री रामानुज चरित पुस्तक से साभार

मद्रास से तीस मील दक्षिण-पश्चिम में श्री पेरम्बुदुर नाम का एक समृद्ध ग्राम है। संस्कृत में इसे श्री महाभूतपुरी कहते हैं। ग्रामवासियों में ब्राह्मणों की संख्या ही अधिक है। गांव के भीतर एक सुन्दर और विशाल विष्णु मन्दिर भी है। उसमें केवल त्रिलोकभर्ता विष्णु श्री आदिकेशव पेरुमल नाम धारणकर विराजमान हैं और सबके प्रति उनकी समान भाव से कृपादृष्टि है। मन्दिर प्रांगण के दूसरे छोर पर एक अन्य देवालय भी सुशोभित होता है। इसमें यतिराज, भक्तवीर, भक्तवत्सल, वेदान्तपद्मार्क, भाष्यकार श्रीमत् रामानुजाचार्य हाथ जोड़े सेवकराज के आसन पर बैठे हैं। सामने एक निर्मल, निस्तरंग, सुविशाल सरोवर पवित्र भक्त हृदय के समान इस वैकुण्ठोपम सम्पूर्ण देवालय को अपने हृदय में धारण किए हुए हैं। इसके अतिरिक्त वहां की नैसर्गिक शोभा भी सबका हृदय बरबस आकृष्ट कर लेती है। यह स्थान नाना प्रकार की वृक्ष लताओं से आच्छादित, विहग कुलों के कलरव से मुखरित, यत्र-तत्र प्रस्फुटित पुष्पों के सौरभ से उद्भासित, शान्ति माधुर्य सौन्दर्य का निलय और हृष्ट पुष्ट लोगों से परिपूर्ण है। वहां जाते ही ऐसा बोध होता है कि निरन्तर विश्व के पालनकार्य में लगे रहकर जब कमलापति बीच बीच में थक जाते हैं, तो विश्राम करने हेतु अपने प्रिय सेवकों के साथ यहीं पधारते हैं।

लगभग 1000 वर्ष पूर्व आसुरी केशवाचार्य नामक एक धर्मनिष्ठ सद्ब्राह्मण का इसी ग्राम में निवास था। उन दिनों श्रीमत् यामुनाचार्य या आलवन्दार ने राजसिंहासन का परित्याग कर नम्बी का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया था और श्रीरंग क्षेत्र में संन्यासी के रूप में निवास कर रहे थे। गुरु के वैकुण्ठ गमन के पश्चात् आलवन्दार ही

तत्कालीन समग्र वैष्णव मण्डली के नेता के रूप में स्वीकृत हुए। उनका असाधारण त्याग, वैराग्य, पाण्डित्य, नम्रता, इष्टनिष्ठा आदि समस्त वैष्णवों के लिए अनुकरणीय हो उठा। उनके द्वारा रचित स्तोत्रों को सबने कण्ठस्थ करके तथा अपने अन्तर में स्थान देकर अपने को धन्य माना। वस्तुत: उन स्तोत्रों में महात्मा यामुनाचार्य ने ऐसी उत्कट भक्ति एवं प्रीति के साथ श्री भगवान के पादपद्मों में आत्मनिवेदन किया है कि उसे पाठ करने पर धर्मविद्वेषी वैष्णवों ने आकर उनका शिष्यत्व ग्रहण किया और अपने को परम भाग्यवान माना। उनमें दो एक संन्यास लेकर उनके साथ रहकर उनकी सेवा में दिन बिताते हुए स्वयं को सर्व प्रकार से धन्य मानने लगे।

पेरिय तिरुमलै नम्बी उर्फ वृद्ध श्री शैलपूर्ण यामुनाचार्य के प्रधान शिष्य हुए। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम भाग में गृहस्थाश्रम त्यागकर उक्त महापुरुष से संन्यास ग्रहण किया और उनके सान्निध्य में रहने लगे। उनकी दो बहनें थीं। बड़ी का नाम था भूमि पेराट्टी, भूदेवी या कान्तिमती और छोटी का नाम था पेरिय पेराट्टी या महादेवी।

श्री पेरम्बुदुर निवासी आसुरी केशवाचार्य ने कान्तिमती का पाणिग्रहण किया था। छोटी बहन महादेवी निकटस्थ अहरम ग्राम के निवासी कमलनयन भट्ट के साथ विवाह श्रृंखला में आबद्ध हुईं। दोनों बहनों का विवाह सम्पन्न हो जाने के पश्चात् श्री शैलपूर्ण ईश्वर के ध्यान में तन्मय हुए और अन्तत: महात्मा यामुनाचार्य के समान सद्गुरु प्राप्तकर वृद्धावस्था में उन्हीं के साथ रहकर परमानन्द का उपभोग करने लगे।

आसुरी केशवाचार्य के अतिशय यज्ञनिष्ठ होने के कारण पण्डितों ने उन्हें सर्वक्रतु की उपाधि दी थी। अत: उनका पूरा नाम श्रीमद् आसुरी सर्वक्रतु दीक्षित हो गया था। विवाह के बाद उन्होंने अपनी सहधर्मिणी के साथ अनेक वर्ष श्री पेरम्बुदुर में सुखपूर्वक बिताए, परन्तु बाद में कोई सन्तान न होने के कारण... **अगले अंक में जारी**

।। श्री गुरूहरिः ।।

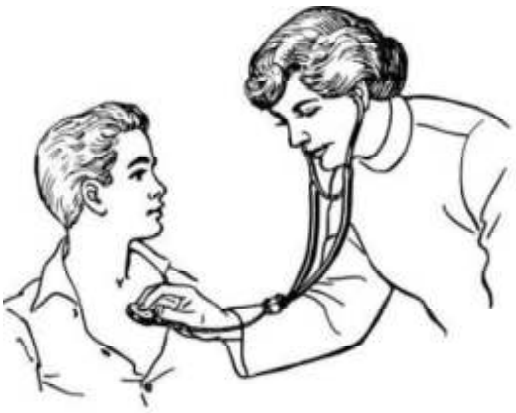

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम
(श्री सिद्धदाता आश्रम)

प्रांगण में जनहित सेवा चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

चिकित्सा शिविर

प्रत्येक रविवार प्रातः नौ बजे से उच्च प्रशिक्षित चिकित्सा विशेषज्ञों एवं उनके सहयोगियों द्वारा आयुर्वेद, अंग्रेजी, होम्योपेथी व प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से रोगियों को बेहतर और निशुल्क चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध हो रही हैं।

वैकुंठवासी गुरु महाराज की कृपा एवं अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के आशीर्वाद से शिविर अपनी उपयोगिता स्वयं सिद्ध कर रहे हैं। अब तक लाखों जरूरतमंद इसका लाभ उठा चुके हैं और सैकड़ों मरीज प्रतिदिन अपना इलाज कराकर लाभांवित हो रहे हैं।

दिव्यधाम: विभिन्न छवियों में

श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम (श्री सिद्धदाता आश्रम) में अधिपति अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज संग 1– अयोध्या स्थित अशरफी भवन के आचार्य जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री श्रीधराचार्य जी महाराज श्री नारायण गौशाला में। 2–3 बाबा विश्वनाथ कॉरिडोर के लाइव लांचिंग देखते भाजपा जिलाध्यक्ष श्री गोपाल शर्मा जी एवं स्वामी सुदर्शनाचार्य वेद वेदांग संस्कृत महाविद्यालय के छात्र। 4–5 अन्नपूर्णा जयंती पर आश्रम स्थित अन्नपूर्णा रसोई में पूजन एवं सेवादार। 6–7 श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम के अर्चकों को सर्दियों के वस्त्र एवं अन्य गर्म कपड़े प्रदान किए गए।

जनहित मानव कल्याण केंद्र के लिए प्रकाशक मुदक प्रहलाद शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794–795, गुरु रामदास नगर एक्सटेंशन, लक्ष्मीनगर, दिल्ली–110092 से मुद्रित व ई–9 मेन रोड, पाण्डव नगर, दिल्ली–110091 से प्रकाशित। संपादक–शकुन रघुवंशी अतिरिक्त

Postal Regd. No. DL (E)-20/5031/19-21
Regd. under RNI No. DEL HIN/2003/11728
posted on 14 & 15 of every month